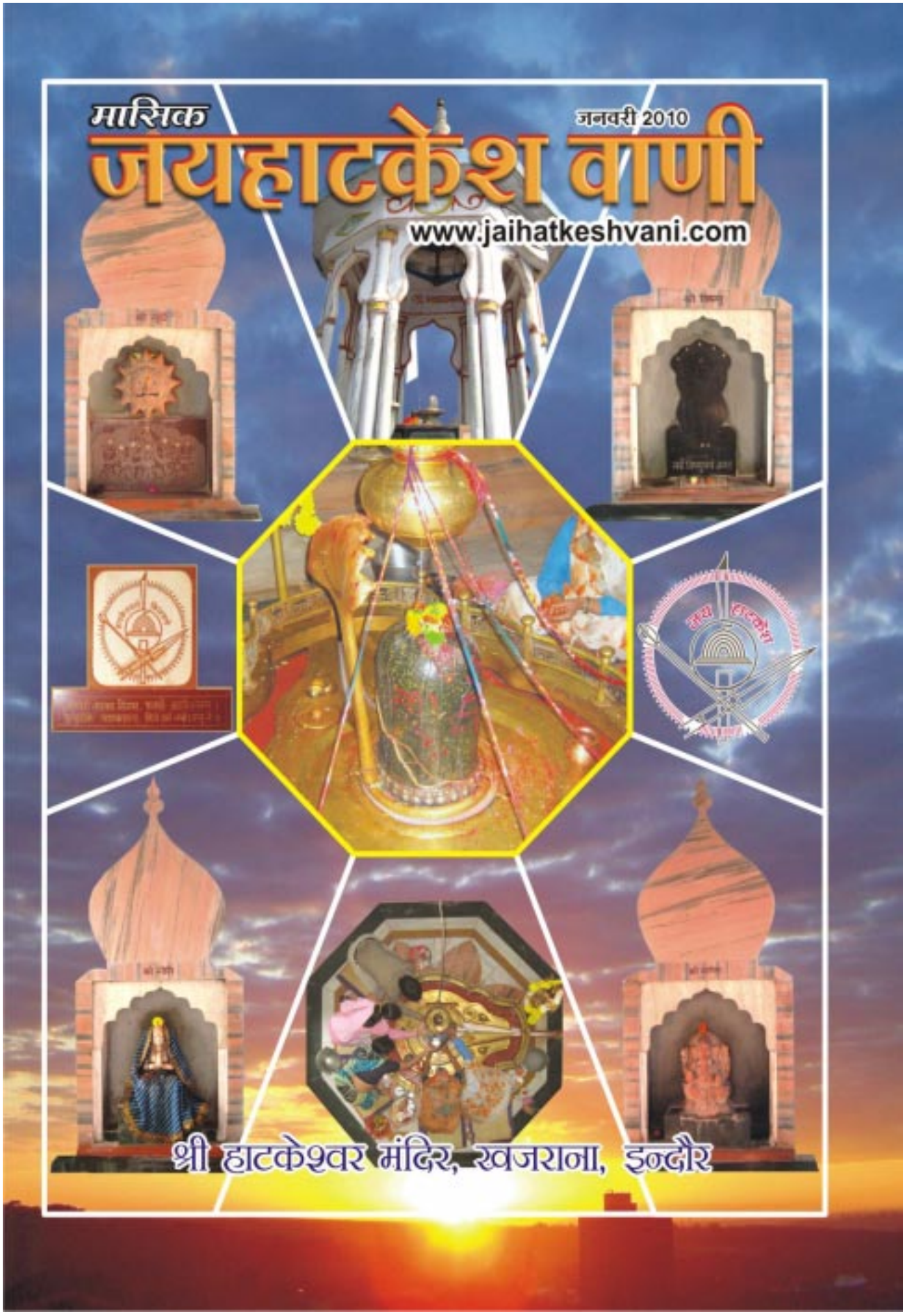
मासिक
जनवरी 2010
जयहाटकेश वाणी
www.jaihatkeshvani.com
श्री हाटकेश्वर मंदिर, खजराना, इन्दौर

जन्म शताब्दी अवसर
२६ जनवरी २०१०
पर विशेष

देखें पृष्ठ ८ व ९ पर

स्व.श्री हाटकेश्वरजी नागर, कोलकाता

सम्पादकीय...

एकता और सद्भावना की जरुरत

वर्तमान समय में समाज में एकता एवं सद्भावना की सबसे ज्यादा जरूरत है। समाज के धर्मशाला एवं मंदिर निर्माण का प्रश्न हो या जरूरतमंद समाजजनों का सहयोग करने की बात हो हम-सब मिलकर एक हो जाएं-बूंद बूंद से गागर भरें तथा उस धन को निर्माण कार्यो तथा सद्कर्मो में लगाएं। हम यदि कमाए गए धन का कुछ हिस्सा समाजकल्याण में खर्च करना शुरू करेंगे तो देखना कि भविष्य में आयोजनों के दौरान धन के अपव्यय पर रोक लगकर उसका सदुपयोग करने की प्रवृत्ति अपने आप पनपेगी। समय की मांग के अनुसार यदि हम धर्मशाला की जगह वैवाहिक परिसर (गार्डन) का निर्माण करें तथा प्रत्येक नागर बहुल क्षेत्र में समाज के कार्यक्रम करने के लिए स्वयं का स्थान अवश्य उपलब्ध हों। समाजजनों को एक मंच पर लाने तथा उन्हें समाजकार्य के लिए खुले हाथों से योगदान हेतु प्रोत्साहित करने के लिए समाज की पत्रिका जय हाटकेश वाणी कमर कसकर तैयार है। माना कि समाजजनों को किसी कार्यक्रम के माध्यम से एक जगह एकत्र करना मुश्किल है उसमें श्रम एवं धन का इंतजाम भी करना पड़ता है। जबकि सामाजिक पत्रिका घर-घर पहुंचकर लोगों को एकसूत्र में बांधकर उन्हें समाज कल्याण हेतु तन-मन-धन से सहयोग हेतु तत्पर कर सकती है। यह तो हुई एकता के माध्यम से सहयोग की बात.... साथ ही सद्भावना भी... उनके प्रति जो मुख्य धारा में पीछे छूट रहें है जिन्हें अपना जीवन चलाने में आपकी जरूरत है उन्हे यथासंभव सहयोग देकर अपने साथ ले चलने की प्रवृत्ति का नाम है सद्भावना, किसी व्यक्ति के सुख-दुःख में शामिल हो जाने की प्रवृत्ति है सद्भावना, कोई आगे बढ़ रहा है उन्नति कर रहा है उसको बगैर ईर्ष्या के शुभकामनाएं देना है सद्भावना, अतः समाज में टांग खींचने की प्रवृत्ति का नाश करते हुए हम सब एकता के सूत्र में बंधें तथा सद्भावना के माध्यम से हम सब एक समान हो जाएं न कोई गरीब रहे न कोई उपेक्षित। हमारी प्रवृत्तियां ऐसी हो कि दुनिया हमारी मिसाल दें। भगवान हाटकेश्वर एवं कुलदेवी माँ अंबाजी का आशीर्वाद तो हमारे साथ है ही...!

–संगीता शर्मा

समाज सेवा में महिलाएं भूमिका निभाएं

वर्तमान समय में जब महिलाएं सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता एवं सक्रियता का परिचय दे रही है, ऐसे में समाजसेवा के क्षेत्र में भी महिलाओं से ज्यादा सक्रियता की अपेक्षा की जा सकती है। हालांकि नागर महिला मंडल की बैठक इन्दौर में नियमित चल रही है, वहीं महिला सदस्यों की किटी पार्टी भी माह में एक बार होती है, मेल-मुलाकात के ही ये अवसर समाजसेवा के मुकाम तक पहुंचने के रास्ते खोल सकते हैं। केवल इन्दौर ही नहीं अपितु शाजापुर, उज्जैन, खण्डवा, देवास, भोपाल आदि सभी नागर बहुल बड़े शहरों साथ ही नगरों तथा तहसीलों में भी महिलाएं सक्रिय हों, वे आपस में मेलजोल बढ़ाकर जहां धर्मशालाएं हैं उनका विकास एवं उपयोग बढ़ाने के क्षेत्र में तथा जहां धर्मशालाएं नहीं है वहां निर्माण के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकती है। दोपहर का समय आमतौर से महिलाओं के लिए उपयोगी हो सकता है। वे अपना अमूल्य समय निकालकर समाज की अधिकाधिक महिलाओं को अपने साथ जोड़ें तथा उन्हें सृजनात्मक कार्य के लिए तैयार करें। धर्मशाला निर्माण के लिए धन संग्रह करना हो, या अन्य समाजहित के कार्य वे अपने हाथ में ले सकती है। गतिविधियों में सभी नागर परिवारों को जोड़ने का एक तरीका यह भी है कि उनसे यथासंभव आर्थिक योगदान लिया जाए। सभी परिवारों से एक निश्चित राशि प्रतिदिन भले ही वह एक रुपया ही क्यों न हो निकलवाया जाए तथा उस राशि को एकत्र कर महिला सदस्य जिम्मेदार व्यक्ति तक पहुंचाने में भूमिका निभा सकती है। इससे प्रत्येक समाजजन में समाजसेवा की भावना उत्पन्न हो सकेगी, साथ ही आपसी मेलजोल बढ़ाने के लिए एक या दो माह में कोई आयोजन किया जा सकता है।समाज में किसी जरूरतमंद की आर्थिक मदद करना हो तो यह महिलाओं का समूह बूंद-बूंद से गागर भर कर उसे समर्पित कर सकता है। समाजसेवा के बहुत सारे प्रकार है, परन्तु सर्वप्रथम हम एक हों, नियमित मेलजोल हो, तथा कारवां बनाकर समाजसेवा के कार्य में जुट जाएं। यह आज की आवश्यकता है। साथ ही जीवन धन्य करने का अचूक उपाय भी।

–सौ. दिव्या मंडलोई

नागर गौरव

श्री अमिताभ मंडलोई
इन्दौर

श्रीमती मोनिता जोशी
राऊ (इन्दौर)

श्री मौसम मेहता
इन्दौर

नागर महिला मंडल इन्दौर द्वारा बोन्साई पौधों की कार्यशाला आयोजित की गई

शिवेष शर्मा
को स्वर्ण पदक

उज्जैन में म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति द्वारा नागर प्रतिभाओं का सम्मान

पुज्यनीय अम्माजी के लाडले

३१ दिसम्बर

श्री बृजगोपालजी मेहता

(सुपुत्र–निशकलांदेवी स्व.कृष्णदासजी मुखिया)

जन्मदिन की बधाई

–शुभाकांक्षी–

(धर्मपत्नी)श्रीमती अरुणा मेहता, (बेटी) सोनिया, (बेटा)अनिरुद्ध,
(भाई) श्री सुरेन्द्र–अंजना मेहता , (भतीजे) बाबु, शानु
(बहनें) श्रीमती चन्द्रकांता–रामवल्लभजी नागर, सोनकच्छ
श्रीमती बृजलता–प्रमोदजी शुक्ला, मानसी, उज्जैन
श्रीमती मधु–स्व.श्री मनोज नागर, केयूर, मोहित, सूरत(गुज.)
एवं समस्त परिवार।

विशेष बधाई–श्रीमती बिन्दु–प्रदीप मेहता एवं परिवार, रतलाम–इन्दौर

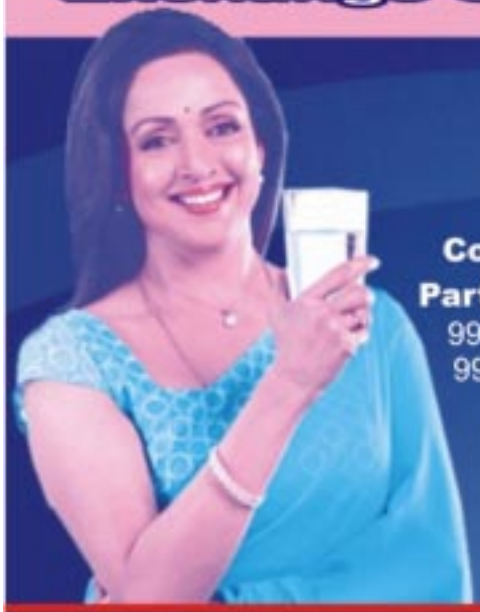

New Year Special Offer
Range Starts from
2,400 Rs. to 14,500 Rs.
Exchange Offer Available
KENT GRAND+
Authorized Sales & Service Center
RO System, Indore
Contact- 99770-98946, 99266-11334
Contact for
Part Time Job
9977098946,
9926611334
KENT
Mineral RO
Water Purifiers

अब पैर भी मुस्काएँ
चन्दन की खुशबू में
वामा™ क्रीम
❋ फटी एड़ियाँ
❋ फटे हाथ–पैर
❋ खारवे ❋ केन्दवा
❋ मामूली जलना
❋ सूखी त्वचा
❋ आफ्टर शेव
❋ फोड़े–फुंसी
❋ त्वचा का कटना
❋ मामूली घाव आदि
के लिये अचूक क्रीम
पंचसुधा
वामा क्रीम
सुखामृत
❖ जालिम-एक्स मलम ❖ जालिम-एक्स रूज़ ❖ जालिम-एक्स लोशन ❖ अंजू कफ सायरप
❖ मेकाडो बाम ❖ पेन क्योर आइंटमेंट ❖ पेन ऑफ ऑईल ❖ अंजू बाम
अंजू फार्मास्यूटिकल्स
१११/११२, अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी,
ए.बी. रोड, इन्दौर–०१ मो.: ०९४२५०–६२४१५

संस्थापक-
स्व.श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
संरक्षक-
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
श्रीमती प्रतिभा आलोकजी मेहता
श्रीमती विशाखा मौलेशजी पोट्टा
श्रीमती नलिनी रजनीभाई मेहता
श्रीमती शारदा विनोदजी मण्डलोई
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
श्रीमती उषा रमेशजी दवे
श्रीमती अंजना सुरेन्द्रजी मेहता
श्रीमती सुषमा सुभाषजी व्यास
श्रीमती प्रमिला आशीषजी त्रिवेदी
श्रीमती प्रमिला ओमजी त्रिवेदी
श्रीमती शीला जगदीशजी दशोरा
श्रीमती रमा सुरेन्द्रजी मेहता
प्रधान सम्पादक-
सौ. संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक-
सौ. दिव्या अमिताभ मण्डलोई
सौ. दमिता नवीन झा
सह सम्पादक-
सौ. रुचि उमेश झा
सौ. संगीता विनोद नागर
सौ. सुनिता धर्मेन्द्र भट्ट
सौ. अरुणा बृजगोपाल मेहता
सौ. सरोज पं. कैलाश नागर
सौ. नीलम राजेन्द्र शर्मा
सौ. नीता वाल्मिकी नागर
सौ. जया सुभाष नागर
सौ. पल्लवी जय व्यास
सौ. तृप्ति निलेश नागर
सौ. ममता मुकुल मण्डलोई
सौ. ज्योति राजेन्द्र नागर
सौ. वन्दना विनीत नागर
सौ. आशा योगेश शर्मा
सौ. संगीता प्रदीप जोशी
सौ. बिन्दू प्रदीप मेहता
सौ. पूजा अमित व्यास

❒ **प्रादेशिक प्रतिनिधि** ❒
उज्जैन-**सौ.प्रमिला हेमन्तजी त्रिवेदी**
मो.98273-50403
देवास-**सौ.सरिता मोहनजी शर्मा**
मो.98273-98235
झाबुआ-**सौ. लीना-राजेशजी नागर**
मो. 9424064104
शाजापुर-**सौ.ममता गोपालकृष्णजी नागर**
मो.94250-34716
खण्डवा-**सौ.शोभना सरोजजी जोशी**
मो.98267-74742
खरगोन-**सौ.वर्षा आशीषजी नागर,**
मो.98936-18231
रतलाम-**सौ.श्वेता राहुलजी नागर**
फोन-07412-407120
नीमच-**सौ.सावित्री रमेशजी नागर**
मो.94240-33419
नागदा-**सौ.शैलबाला विजयप्रकाशजी मेहता**
मो.98270-85738
भोपाल-**सौ.ज्योति मुकेशजी नागर**
मो. 98273-39787
राऊ-**सौ.माया गिरजाशंकरजी नागर**
फोन-0731-6538275
माकड़ोन-**सौ.सुनीता महेन्द्रजी शर्मा**
फोन-07369-261391
खड़ावदा-**सौ.नैना ओमप्रकाशजी नागर**
मो. 98267-32441
ग्वालियर-**सौ. भारती पंकजजी नागर**
मो. 94240-27710
नरसिंहगढ़-**सौ.उषा अरुणजी मेहता**
मो.94250-45137
मन्दसौर-**सौ.संगीता जयेशजी नागर**
मो. 98932-52369
बेरछा-**सौ.वन्दना शलभजी शर्मा**
मो. 99266-57691
सिहोर-**सौ.शोभा अनिरुद्धजी नागर**
मो. 98931-02444
पिपल्यामंडी-**सौ.सुशीला बाबूलालजी नागर**
मो. 94251-07327

❒ **राष्ट्रीय प्रतिनिधि** ❒
नई दिल्ली-सौ. मृदुला-सुधीरजी पांड्या
फोन-09868048080
मुम्बई-सौ.उषा पुरुषोत्तमजी ठाकोर
फोन-098331-81575
कोलकाता-सौ. शशि आर.के. झा
फोन-033-26665094
हैदराबाद-सौ.नवरत्न राजेन्द्रजी व्यास
मो.09346998456
इलाहाबाद-सौ.सुधा नित्यानंदजी नागर
फोन- 0532-2240059
मेरठ-सौ.अलका अमरलालजी पंड्या
मोबा.-093688-88873
अकलेरा- सौ.गायत्री-कुलेन्द्रजी नागर
फोन 07431-272506
बांसवाड़ा-सौ. मंजु प्रमोदरायजी झा
मो.-09413947938
कोटा-सौ.मधुबाला रमेशजी नागर
फोन-0744-2431481
जयपुर-सौ.सुषमा वीरेन्द्रजी नागर
मोबा.-09414214143
सुमेरपुर-सौ.चंद्रकला दयारामजी नागर
फोन-02933258867
राजकोट-सौ.सुहासिनी दिलीपभाई मांकड़
फोन-02812468066
बड़ौदा-सौ.जंखनाबेन मेहुलजी मजमूदार
फोन-0265-3258159
आणंद-सौ.प्रज्ञा पियुषजी पंडित
मोबा.-099798-83798
अहमदाबाद-सौ.सोनिया विवेकजी मंडलोई
मोबा.-097121-38061
भावनगर- सौ.जयंतिका रश्मिजी पाठक
मो. 094287-50541

सम्पर्क-20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर फोन. 0731-2450018
फैक्स-0731-2459026, मो.94250-63129, 98260-95995, 94259-02495, 98260-46043, 93032-74678, 99262-85002, 93032-29908
Our website:www.jaihatkeshvani.com
Email-manibhaisharma@gmail.com, jayhotkeshvani@gmail.com

स्व. श्री हाटकेश्वरजी नागर (झा) के जन्मशताब्दि अवसर पर एक भावभीनी श्रद्धांजली

कितनों को मकान और रोजगार दिलाया...याद नहीं

एक साधारण बड़नगरा प्रतिष्ठित परिवार में जनवरी 1910 में भिन्ड (राज्य ग्वालियर) में जन्में, सवलगढ़ (राज्य ग्वालियर) में अपने पिता स्व. श्री राजलालजी के कार्यस्थल में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर, हाथरस (यू.पी.) से मैट्रिक पास करके सन् 1928 में कलकत्ता में 6 मास ईस्टर्न बैंक में सर्विस प्रारंभ कर, तत्पश्चात् उसी वर्ष बैंक ऑफ इण्डिया में सर्विस परिवर्तन कर उसी बैंक में अत्यन्त सराहनीय कार्य करके उच्चतम शिखर पर आसीन होकर सन् 1972 में अवकाश ग्रहण कर, अनायास सन् 1981 में मृत्यु को प्राप्त हुए स्व. श्री हारकेश्वरजी नागर (झा) के अपने परिवार एवं विविध कार्य-कलापों का परिचयात्मक लेख मैंने पहले नागर समाचार में प्रस्तुत किया था। आज उनकी जन्म शताब्दि के अवसर पर भावभीने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए, पाठकों के समक्ष उनके बहुमुखी आयामों का स्मरण प्रस्तुत करता हूं।

मैंने अपने जीवन काल में नागरजी जैसा सरल, सहृदय, मृदुभाषी, हंसमुख व्यक्ति आजतक नहीं देखा। वे कर्मयोगी थे। केवल बैंक के परिचालन में ही अपनी प्रतिभा प्रतिष्ठित कर लेने मात्र से संतुष्ट नहीं थे। स्टॉक एक्सचेन्ज में भी उनका दखल था। आलू की फसल आने पर आलू कोल्ड स्टोरेज में रखवाकर बाद में सही समय आने पर निकालने का काम भी किया। ऐसा करने में वे केवल अपना लाभ ही नहीं देखते थे बल्कि दूसरों को भी लाभ करवाते थे। मैं स्वयं इस बात का प्रमाण हूं कि वे अपने ईष्टमित्रों एवं परिजनों को भी समय-समय पर सुझाव देते थे तथा कई बार तो उनके नाम से करके अपना रूपया लगाकर उसका लाभ उन्हीं को दे देते थे। यह तो सर्व विदित है कि उन्होंने रिसड़ा में बांगड़जी के वहां से कई नागर परिवारों को जमीन डिस्काउन्टेड रेट पर दिलवाई जिस पर बने हुए मकान एवं वहां पर रह रहे लोग इसके साक्षी हैं। कई नागरों का रूपया अपने परिचय के कारण बड़े व्यापारियों के यहां अच्छे ब्याजपर लगवाते थे। इस संदर्भ में मैं कहूंगा कि वे नेकी कर और कुंए में डाल में विश्वास करते थे। एक हाथ से जो देते थे वह दूसरे हाथ को मालुम नहीं पड़ता था। कभी किसी को मालुम नहीं पड़ता था कि उन्होंने किसके साथ क्या भलाई की जब तक कि वह स्वयं उनके गुणगान न करें।

यह भी सर्व विदित है कि उन्होंने केवल समाज के अपितु उनके इर्द-गिर्द जो भी उनके सम्पर्क में आया उनकी नौकरी लगवाने में मदद की। आज के दिन यह गिनती कर पाना भी कठिन है कि उन्होंने बैंक ऑफ इण्डिया की कलकत्ता शाखाओं में एवं अन्य संस्थाओं में भी कितनी नौकरियां लगवाई। हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार आगे बढ़ा एवं अधिकतर व्यक्ति उच्च पदों पर आसीन होकर सेवानिवृत्त हुए। इससे लाभान्वित परिवार उन्हें श्रद्धा से याद करते हैं।

अपने परिवार यहां पर मेरा तात्पर्य उनके संयुक्त परिवार से है- के प्रति अत्यन्त संवेदनशील थे। उनके सुख-दुःख में उनके साथ रहना एवं तन, मन व धन से उनकी मदद करना वे अपना धर्म मानते थे। नागरजी बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। नित्य प्रातःकाल पार्थिव पूजा करते थे. पूजा में किसी प्रकार का व्यवधान वे पसन्द नहीं करते थे। आडम्बर में उनको विश्वास न था। शिवजी के वे अनन्य भक्त थे। हमारे समाज की संस्थाओं जैसे हाटकेश्वर पुस्तकालय (वर्तमान हाटकेश्वर परिषद्) नेहरू क्लब आदि द्वारा आयोजित खेल-कूद, नाटक, समारोह आदि में भरपूर आर्थिक मदद ही नहीं अपितु उपस्थित रहकर अतिरिक्त पुरस्कार आदि देकर प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन करते थे।

नागरजी सबको साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे। सबके साथ आनन्द बांटने में ही उनको आनन्द आता था। तारकेश्वर यात्रा में लोग साथ गए थे वे ही जानते हैं कि उस यात्रा में कितना आनन्द आया था। एक लॉरी में जितने लोग आ सकते थे उतने लोगों का ले जाया गया। एक कोल्ड स्टोरेज में खाने की उत्तम व्यवस्था की। बाबा के अद्‌भुत दर्शन किये और सानन्द घर लौटे। वे जितनी यात्राओं पर गये- बद्री, केदार, द्वारका, बैजनाथधाम, रामेश्वरम तथा दक्षिण के अन्य तीर्थ स्थान, जगन्नाथपुरी आदि इन यात्राओं में उनके साथ कोई न कोई परिवार के अतिरिक्त सदस्य होते ही थे। ऐसा विलक्षण उदार व्यक्ति कहां देखने को मिलता है। उनके मनोबल को बढ़ाने में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती का पूरा हाथ एवं सहयोग रहा।

नागरजी किसी भी परिपाटी में अति विश्वास नहीं करते थे। आज जितना पाकेट में है उसको देने में उनको कोई संकोच नहीं होती थी पहिले कम दिया था अब अधिक कैसे दे या विपरीत या सब उनके- उदार मन को रास न आता था। आज जितना है, उतना दो और मन से दो। ऐसा उनका मानना था।

पर दुःखे उपकार करे जेने मन अभिमान न आने दे।
ऐसे शिवभक्त नरपंग व ज्ञाति गौरव को मेरा शत्-शत् नमन।।

-कृपाराम ठाकौर,
कलकत्ता

म्हारा परम प्रिय अने पूज्य भ्राता

स्व. श्री हाटकेश्वरजी झा (नागर)

(1910-2010)

म्हारा परम प्रिय अने पूज्य, सन् 1910 मा जन्मया म्होटा भाई स्व. श्री हरकेश्वरजी झा (भाईयो) हमारा सहोदर 6 भाईयों अने 3 भेनोर मा तृतीय हता। हमारा स्व. पिता श्री राजालानजी तथा मातुश्री छबीली एक साधारण प्रतिष्ठित भिन्ड (राज्य ग्वालियर) मा वस्या समूह ना बडनगरा नागर परिवार ना हता तथा जीविका हेतु सबलगढ (राज्य ग्वालियर) मा प्रतिष्ठित राजकीय कोषाध्यक्ष हता। भइयो नी प्रारंभिक शिक्षा सबलगढ मा थी। मेट्रिक पोताना चचेरा भाई श्री स्व. रामलालजी ने त्या हाथरस मा रही कोघूं। सन् 1928 मा कलकत्ता आवी ईस्टर्न बैंक मा 6 मास कार्य करी ऐज वर्ष बैंक ऑफ इण्डिया मा नौकरी प्रारंभ कीधी अने उत्तरोत्तर उन्नति करी अत्युच्च पद पर आसीन थई सन् 1972 मा अवकाश प्राप्त कीधो। सन् 1970 मा बैंको ना राष्ट्रीयकरण थवा पछी 2 साल नो भारत सरकार या एक्सटेंसन आप्या जे एक रिकार्ड छे।

ए समय बैंक ना मैनेजर अंग्रेज रेहता हताने कलकत्ता नो उद्योग तथा व्यवसाय मारवाडियों ना हाथ मा हतूं। बेउ न बच्चे सम्पर्क कराव्वा नूं कार्य भाईयो नू हतूं उद्योगपतियों नी सम्पूर्ण जाणकारी मेलवी बैंक थी म्होटा ऋण अपाव्वा नूं महत्वपूर्ण कार्य भईयो सम्पादित करता। ए संदर्भ मा शहर ना बधाय उच्च व्यापारियो थी पूर्ण सम्पर्क रहतो म बधाय नी गतिविधियों नी समीक्षा करवूं प्रधान कार्य हतूं। एक समय पूंजीपतियों या अनेक विदेशी, देशी बैंको ना अधिकारियों ने प्रलोभन आपी म्होटो गाबडो कीधो ने करोडो रुपया बैंक ना बाकी रह्या। भइयो नी बैंक मालिको यां खोज कीधी तो ए बैंक नो एक भी केस एवो न थयो जेनो कारण केवल भइयो नी रिपोर्ट ए लोगों थी सतर्क रेहवा नी हती यद्यपि ए वधाय बैंक ऑफ इण्डिया पासे भी आव्या हता। बैंक नो असाधारण विश्वास पाम्यो।

बैंक की एक शाखा विवेकानन्द रोड मा भइयो या पोताना प्रयास थी खोली-जेमा रिकार्ड 1000 एकाउन्ट तथा एक करोड नो डिपोजिट प्रथम दिवस थयो जे बैंको ना इतिहास मा अद्वितीय होतीं। ए थी प्रसन्न थई मालिको यां बोर्ड मां प्रशंसा-पत्र पास करी एक नटराज नी मूर्ति भेंट कीधी। बैंक नी एक समय शाखाये केवल मेट्रो शहरो मा ज हतीं। बोर्ड यां बैंक नू कार्य वधारवा निर्णय करी अनेक शहरो मा शाखा खोलवा नूं कार्य भइयो ने आप्यूं जेने अन्तर्गत अनेक शाखायें- रांची, पटना, धनवाद, इलाहाबाद, बनारस, कानपुर, इन्दौर, ग्वालियर, भोपाल, आगरा आदि शहरों मां उचित स्थान मा अफिस लेवा नूं महत्वपूर्ण कार्य कीधूं - ने ए बधाय स्थानो मा प्रारंभिक कार्य जोवा माटे सुयोग्य विश्वसनीय सुशिक्षित नवयुवक भइयो यां चयन करी राख्या। स्वाभाविक छे जे एमा नागरों नी संख्य वधारे हती। बैंक नी ओर थी अस्थायी, पार्टियों ना खाता मा, गोदामकीपर भी घणा राख्या। ततपश्चात् राष्ट्रीयकरण थावा थी वधाय अस्थायी कर्मचारी स्थायी थया ने वीजा नवयुवकों यां निरन्तर उच्च पद प्राप्त करी अवकाश लीधो।

म्हारे साथे व्यक्तिगत संबंध अत्यन्ता प्रगाढ हतो। संयुक्त परिवार मा साथे रेहता सन् 1941 थी। नित्य गोपनीय थी गोपनीय विषयों पर परामर्श थातो। हमारा वृहत झा परिवार ना अनेको परकण एमनी लीडरशीप मा सुचारू रूप थी सम्पन्न थाता। म्हारी भाभी श्रीमती विद्यावती अग्रणी रेहता ने पूर्ण सहयोग आपता। समस्त परिवार नो भइयो ध्यान राखता। म्हारा म्होटा भाईयों तथा वृद्ध माता-पिता ने भईयों यां समस्त भारत नी यात्रा करावी जेमा अन्य वृद्ध संबंधियों ने भी साथे लेता पोताना आभार पर। एम वधूं कार्य सुसम्पन्न थातूं। एमना पोताना परिवार मा त्रणो सुयोग्य, सुशिक्षित पुत्रो यां उत्तरोत्तर उन्नति कीधी छे अने परिवार ने एकजुट राखवा मा भइयो नाज पदचिन्हों पर चाली रह्या छें। त्रणो ना पुत्र पौत्री तथा 5 छोडियों नो सुव्यवस्थित छे। भइयो यां बीजा सत्कायों ना विषय मा अन्यत्र उल्लेख थयो छे।

सन् 1981 मा म्हारे हार्ट प्रोब्लेम था वा थी नर्सिंग होम मा भर्ती करावी म्हारी स्त्री ने पोता नो आर्शीवाद आप्यो, घेर जई अनायास पडी गया तो कौमा मा ज रही देहत्याग कीधो। म्हारे तो सूचना एक सप्ताह पछी आपी गई त्यार थी म्हारे तो एमनो अनायास विछोह नित्य याद आवे छे।

आज एमना 100 वर्ष जन्मशताब्दि ना अवसर पर हूँ, 86 वर्षीय ऐनो एकमात्र अनुज, पोतानी, वृहत् झा परिवार, अन्य आत्मीय अनेकों संबंधियों, अने परिचितो नी ओर थी श्रद्धा-सुमन अर्पित करूं छूं ने शत्-शत् नमन एमने स्मरण करी अर्पित करूंछूं।

जय हारकेश

-मुरारी लाल झा

वे भी नागर ब्राह्मण थे... तो हम क्यों नहीं कर सकते?

लोकोक्ति है कि हमारे साथ जो शहर में समूह के रूप में बोहरा समुदाय निवास करते हैं ये कभी नागर ब्राह्मण ही थे। बड़े-बुजुर्ग कहा करते थे कि 'इन्हें मार-मारकर मुसलमान बनाया गया है' जो भी हो किन्तु उनके रहन-सहन एवं नियमों के बारे में यदि चर्चा की जाए तो ये सब समूह रूप में एकता के साथ रहते हैं। अपनी कमाई में से सवा प्रतिशत हिस्सा पूरी ईमानदारी से निकालकर समाज कल्याण हेतु दे देते हैं इनके द्वारा दान दी गई राशि के आज अरबों रु. के कोष है जिनसे रोजगार-स्वास्थ्य, शिक्षा के प्रबंध किए जाते हैं। सवा प्रतिशत हिस्सा दान देने के अलावा भी सम्पन्न वर्ग अपने समाज बंधुओं को हर प्रकार की मदद करते हैं। ज्यादातर लोग व्यवसाय में रत है तथा जरूरतमंदों को उसी कोष में से बगैर ब्याज का धन प्राप्त होता है जो समाजजनों को दान के रूप में प्राप्त होता है। कितनी अच्छी व्यवस्था है- सभी लोग ईमानदारी से पैसा देते हैं तथा उसका समाज हित में उपयोग होता है। एक परिचित ने बताया कि बोहरा समाज के एक सम्पन्न व्यापारी ने इन्दौर में ही एक मस्जिद के निर्माण हेतु साढ़े नौ करोड़ रु. दिए लेकिन शिलालेख पर अपना नाम तक नहीं लिखवाया। समाज में इतनी एकता है कि एक व्यक्ति के संकट में पड़ने पर पूरा समाज मदद के लिए उतर पड़ता है। क्या कभी आपने बोहरा समाज के किसी व्यक्ति को भीख मांगते देखा है.. नहीं क्योंकि वे कोई भी छोटा-मोटा व्यवसाय अपना लेंगे मगर भीख नहीं मांगेंगे। कभी किसी बोहरा समाजजन को कोर्ट या थाने का चक्कर लगाते देखा है... नहीं.... पहले तो वे किसी विवाद में पड़ते ही नहीं... यदि नौबत आई भी तो आपस में बैठकर समाधान कर लेते हैं। वे हमेशा समूह के रूप में निवास करते हैं तथा आज आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्ग स्वरूप जाने जाते हैं। उनकी धार्मिक आस्था इतनी प्रबल है कि उसी के कारण वे अपना जीवन ईमानदार बना पाए हैं। धर्मगुरु का कहा उनके लिए पत्थर की लकीर की तरह होता है। नागर समाज को अपने ही इन बंधु-बांधवों के जीवन चर्या के बारे में विस्तृत अन्वेषण करना चाहिए। उन्हें पता चलेगा कि इनकी कितनी अद्‌भूत व्यवस्था है तथा धर्म के प्रति कितनी आस्था है।

भक्ति से मन शुद्ध होता है तथा दान से धन शुद्ध होता है। इसी बोधवाक्य को आधार मानकर प्रत्येक नागर परिवार निश्चित राशि निकालकर समाज कल्याण हेतु अवश्य दें। विभिन्न स्थानों पर आयोजनों में मालवमाटी में सरस्वती के वरदपुत्र पं. श्री कमलकिशोरजी नागर ने समाजबंधुओं का आव्हान किया कि प्रत्येक परिवार ज्यादा नहीं एक रुपया रोज समाज के लिए अवश्य निकालें तथा स्वयं उस एकत्र राशि को समाज के पदाधिकारियों तक पहुंचाएं। वर्तमान में शाजापुर में यह प्रक्रिया शुरु हुई है इन्दौर में प्रति परिवार प्रतिदिन एक रुपया एकत्र करने का अभियान शुरु करें। श्री राजेन्द्र कुमार दवे की प्रेरणा से मासिक जय हाटकेश वाणी ने शिवांजली पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा सूरज नगर में धर्मशाला निर्माण कार्य पूर्ण होने तक एक रुपया रोज देने वाले एक सदस्य से प्रतिदिन भुगतान प्राप्त कर ट्रस्ट कार्यालय तक पहुंचाने की जिम्मेदारी ली है। इस हिसाब से ट्रस्ट को ३६५रु. प्रतिदिन प्राप्त होंगे। वर्षभर में इस प्रक्रिया से १,३३,२२५/- रु. प्राप्त होंगे। वैसे तो प्रत्येक परिवार को स्वयं जिम्मेदारी लेकर एकत्र राशि धर्मशाला निर्माण हेतु देना चाहिए तथा केवल इन्दौर ही नहीं अपितु सभी नगरों में अपना स्थान बनाने के लिए यह प्रक्रिया शुरु की जाना चाहिये। मंदिर-धर्मशाला निर्माण हेतु सभी समाजबंधुओं को यथायोग्य धन देने हेतु प्रोत्साहित करने तथा एकत्र धन को शिवांजली ट्रस्ट तक पहुंचाने के अभियान के फलस्वरूप सर्वप्रथम श्री उमेश झा जानकी नगर इन्दौर ने ३६५/-रु. का चेक हाटकेश वाणी परिवार को उपलब्ध कराया है। हम चाहते हैं कि बूंद-बूंद से गागर भरने के इस अभियान में आप सभी नागर परिवार सहयोग देकर प्रतिदिन समाज के नाम पर एक रुपया निकालने का प्रयोग शुरु करें। एकत्रित राशि आपके घर से एकत्र कर जिम्मेदार तक पहुंचाने हेतु हेल्पलाईन मो. ९८२६०-९५९९५ से संपर्क करें।

-सम्पादक

निकाय चुनाव में नागर समाज को सुयश

राऊ में पार्षद पद पर भारी मतों से विजयी रही श्रीमती मोनिता जोशी

राऊ। श्रीमती मोनिता शैलेष जोशी (कांग्रेस) ने राऊ नगर पंचायत चुनाव में भारी मतों से विजयश्री प्राप्त कर समाज-परिवार और खासकर समाज की नारी शक्ति को गौरवान्वित किया है। 31 वर्षीय मोनिता को अपने पति श्री शैलेष जोशी द्वारा वर्षो के परिश्रम से तैयार राजनीतिक पृष्ठ भूमि का पूर्ण लाभ मिला। श्री शैलेष जोशी पूर्व वरिष्ठ पार्षद एवं एल्डरमेन रह चुके हैं युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष , पूर्व उपाध्यक्ष जिला युवा कांग्रेस, पूर्व अध्यक्ष जेसीस युथ विंग सदस्य-रोटरी इंटरनेशनल, श्री जोशी 20 वर्षो से सक्रिय राजनीति में हैं तथा ओजस्वी वक्ता है। आपने राजनीति के क्षेत्र में समाज सेवा करते हुए रक्तदान (निरन्तर) क्षेत्र के विकास में सक्रिय योगदान , निर्धन विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री की व्यवस्था। निश्चित रूप से श्री शैलेष जोशी के सेवाकार्य के प्रतिफल स्वरूप मोनिता जोशी ने गौरवशाली विजय हासिल की, वे भी पार्षद पद पर विजय के पश्चात नगर विकास एवं समाजसेवा हेतु प्रतिबद्ध है। मोनिता की जीत से नागर समाज भी गौरवान्वित हुआ है तथा सर्वश्री गिरीजाशंकर नागर, प्रकाश शर्मा, पं. मोहनलाल शर्मा, प्रकाश नागर, मनोहरलाल नागर, हेमन्त शर्मा, अशोक नागर, सुखदेव शर्मा, मणीशंकर नागर, विनोद शर्मा (बबलू) रमेश नागर, शंकर नागर ने उन्हें बधाई प्रेषित की है।

तैरना सिखाऊं

ढाबे पर टिकलु- मेरे सूप में मक्खी डूबी पड़ी है।

ढाबा मालिक गुल्लु- तो क्या करुं, ढाबा चलाऊं या इन्हें तैरना सिखाऊं।

श्री अमिताभ मंडलोई के नेतृत्व में नीमच फतह

इन्दौर। निमाड़ के राजीवगांधी के रूप में सुप्रसिद्ध कुशल व्यवसायी श्री अमिताभ मंडलोई (सुपुत्र श्री विनोद-शारदा मंडलोई) को कांग्रेस आलाकमान ने निकाय चुनाव हेतु पर्यवेक्षक नियुक्त किया था, आपके नेतृत्व एवं कुशल मार्गदर्शन की बदौलत ही नीमच के नगर पंचायत अध्यक्ष पद के उम्मीदवार ने विजयश्री प्राप्त की। ज्ञातव्य है कि श्री अमिताभ मंडलोई कांग्रेस की राजनीति में सक्रिय हैं तथा खंडवा लोकसभा का चुनाव भी लड़ चुके है। कांग्रेस आलाकमान श्री मंडलोई की राजनीतिज्ञ सूझबूझ तथा श्रेष्ठता का लोहा मानते हुए समय-समय पर महत्वपूर्ण पद एवं कार्यभार उन्हें सौंपता रहा है। कांग्रेस सरकार के पहले कार्यकाल में श्री मंडलोई को भारी उद्योग मंत्रालय में निदेशक पद दिया गया था, यह नागर समाज के लिए गौरव का विषय है कि श्री अमिताभ मंडलोई के मार्गदर्शन में नीमच में नगर पालिका अध्यक्ष का चुनाव कांग्रेस ने जीत कर रिकार्ड दर्ज किया। हंसमुख, मिलनसार एवं सेवाभावी श्री मंडलोई को राजनीति में उच्च से उच्चतम स्थान प्राप्त हो इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

मौसम मेहता को बधाई

इन्दौर। मौसम मेहता (सुपुत्र-प्रदीप-बिन्दु मेहता) ने नौवी नेशनल सायबर ओलम्पियाड में 18 वी रैंक प्राप्त कर समाज एवं परिवार को गौरवान्वित किया है। आगामी 9 जनवरी को मौसम का जन्मदिन भी है। उपरोक्त उपलब्धि एवं खास अवसर के लिए मेहता परिवार रतलाम एवं नागर परिवार पीपलरावां ने हार्दिक बधाई एवं भावी जीवन के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की है।

प्रवीण नागर को सुयश

उज्जैन। प्रवीण नागर सुपुत्र श्री बालकृष्ण नागर, ऋषिनगर, उज्जैन जो कि ग्रामीण यांत्रिकी सेवाएं, देवास में सब इंजीनियर के पद पर पदस्थ है को जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय, देवास के जनभागीदारी निधि से स्वीकृत निर्माण कार्यों को समय-सीमा में उच्च गुणवत्ता पूर्वक पूर्ण कराये जाने पर निरीक्षणकर्ता डॉ. बी.एल. शर्मा, सलाहकार, राज्य योजना आयोग, म.प्र. द्वारा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। पूर्व में भी आपको वर्ष 2000 में शाजापुर जिले में पदस्थ रहते हुए शत-प्रतिशत निर्माण कार्य समय सीमा में पूर्ण करने हेतु प्रशस्ति पत्र दिया गया था।

महिला मंडल की सदस्यों ने सीखे बोन्साई पौधों के गुर

इन्दौर। नागर महिला मंडल के तत्वावधान में अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे के निवास स्थान पर बोन्साई पौधों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। समाज सेवी श्रीमती पदमा कालानी ने उपस्थित सदस्यों को बोन्साई पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में प्रमुख रूप से अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे , कोषाध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई श्रीमती मीना त्रिवेदी, श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी, श्रीमती नीता नागर, श्रीमती चारूमित्रा नागर, श्रीमती संगीता नागर, श्रीमती अरूणा रावल, श्रीमती राजकुमारी मेहता, श्रीमती गायत्री मेहता, श्रीमती प्रियबाला मेहता, श्रीमती नीलिमा दवे, अनिता पौराणिक उपस्थित थे। साथ ही क्षेत्र की महिलाओं ने भी कार्यशाला में हिस्सा लिया।

महिला मंडल की आगामी बैठक 16 जनवरी को

इन्दौर। नागर महिला मंडल की आगामी बैठक 16 जनवरी शनिवार को अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे के निवास स्थान 'मनसा' 2017 साउथ तुकोगंज में रखी गई है। जिसमें 'रेकी' के बारे में ज्ञानवर्द्धक चर्चा होगी। सभी महिला सदस्य इस सूचना को ही निमंत्रण मानकर पधारने का कष्ट करें।

नागर परिवार स्मारिका हेतु अनुरोध

पीपलरावां। स्थानीय नागर परिषद शाखा पीपलरावां के अध्यक्ष, पत्रकार श्री हरिनारायण नागर के अनुसार नागर धर्मशाला पीपलरावां में 70 बाय 30 का निर्माणाधीन सभाग्रह बनकर तैयार है। इसके शुभारम्भ हेतु नागर भूषण पं. कमलकिशोरजी नागर सेमली से सम्पर्क हेतु हम सतत् प्रयत्नशील है। उनके द्वारा प्रदाय तिथि पर उन्हीं के कर कमलो द्वारा शुभारम्भ सुनिश्चित है। इस उपलक्ष में आयोजित होने वाले भव्य समारोह में लम्बित पीपलरावां नागर परिवार स्मारिका का विमोचन भी होगा। अतः सम्बंधित अवशेष सभी महानुभावों से अंतिम विन्रम निवेदन है कि कृपया 15 जनवरी 2010 तक आवश्यक रूप से अपने परिवार की जानकारी कम्प्यूटराइज्ड कर तथा भेज कर स्मारिका को गति प्रदान करने में हमें अपना सहयोग प्रदान करें।

श्री रावल म.प्र. शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष

मड़ावदा। पिछले दिनों (12 मई 2009) को उन्हेल में म.प्र शिक्षक संघ की उज्जैन जिला ईकाई का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें खाचरौद विकास खण्ड के सबसे बड़े ग्राम मड़ावदा के जनशिक्षा केन्द्र के जनशिक्षक एवं मड़ावदा के ही निवासी श्री राजेन्द्र रावल (नागर) पिता श्री प्रेमनारायणजी रावल (स्व.) को जिला निर्वाचन अधिकारी एवं प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री हिम्मतसिंह जैन ने तथा उज्जैन जिले के विकासखण्ड तहसील के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं व शिक्षकों की उपस्थिति में जिलाध्यक्ष पद पर एक मात्र नाम निर्देशन प्राप्त होने पर सर्वानुमति से निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया। आप पूर्व में वर्ष 2003 से जिला सचिव पद पर कार्य कर रहे थे। श्री रावल जिले के शिक्षकों की आवाज बुलन्द करने वाले, मृदु भाषी, समाजसेवी, कवि, सर्वब्राह्मण समाज खाचरोंद के प्रचार सचिव तथा अनेक संस्थाओं में दायित्व निर्वहन करते हैं आपके निर्वाचन पर अनेक ईष्ट मित्रों एवं समाज के लोगों ने बधाई दी। उक्त जानकारी पत्रकार श्री सचिन रावल ने दी।

श्री नागर पेंशनर संघ के संगठन सचिव नियुक्त

झाबुआ-जिला पेंशनर एसोशिएशन की कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित पेंशनर संघ के पदाधिकारी श्री विजयसिंहजी (भाईजी) अध्यक्ष, मार्गदर्शक श्री एस.डी. पाठक, श्री बी.एस. राठौर, संरक्षक श्री घासीरामजी नागर उपाध्यक्ष श्री एम.सी.गुप्ता , कोषाध्यक्ष श्री रतनसिंहजी राठौर, सचिव श्री बी.एल. साकी, श्री पी.डी. रायपुरिया, श्री सज्जनसिंहजी सांवरिया, श्री बाबुलालजी डांगी, श्री पुनमचन्दजी नागर एवं उपस्थित सदस्यों के समक्ष संगठन सचिव के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु जिला पेंशनर एसोशिएशन के अध्यक्ष श्री विजयसिंहजी (भईजी) द्वारा श्री राजेश नागर नाम प्रस्तावित किया जिसका समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने समर्थन किया व श्री नागर को बधाई दी।

-सुभाषचन्द्र नागर (उपाध्यक्ष)
नागर परिषद् झाबुआ

विद्या

टीचर, क्लास में सो रहे एक स्टूडेंट से- तुम स्कूल क्यों आते हो?

स्टूडेंट- जी, विद्या के लिए।

टीचर- तो क्लास में सो क्यों रहे हो?

स्टूडेंट- सर, आज विद्या नहीं आई।

स्व. सेठ सेवालालजी याज्ञिक की जन्मशताब्दी पर भव्य भागवत आयोजन

बांसवाड़ा। स्व. सेठ सेवालालजी याज्ञिक की जन्म शताब्दी के अवसर पर बालविदुषी वर्षा नागर के मुखारविन्द से भागवत कथा का आयोजन सम्पन्न हुआ। स्व. सेठ सेवालालजी याज्ञिक का जन्म पोष सुदी तीज संवत 1966 को बांसवाड़ा में हुआ। पिताजी श्री गेफरलालजी और माता श्रीमती रूपवंती को यह अहसास नहीं रहा होगा कि संस्कारी परिवार में जन्मा यह बालक इतना नाम कमाएगा कि उनके पुत्र, पौत्र सभी मिलकर जन्म शताब्दी वर्ष में नागर कुल की ही बालविदुषी सुश्री वर्षा नागर से भागवत कथा का पारायण करवाएगा। माही तट पर बसा बांसवाड़ा (लोठी काशी) वहीं पृथ्वीक्लब और वही वर्षा नागर। एक ही वर्ष में भागवत पारायण की यह तीसरी आवृत्ति थी परन्तु हर मायने में ऐतिहासिक। उनका परिवार तो नतमस्तक था ही पूरा नागर समाज उत्साहित था और ऐसे धार्मिक आयोजन में बांसवाड़ा की धर्मप्रेमी जनता का आनन्दित और भाव विभोर होना स्वाभाविक था। पोथी यात्रा का आयोजन यजमान श्री इन्द्रेश याज्ञिक, श्री मयंक याज्ञिक परिवार ने अपने इष्ट श्री राधावल्लभ संप्रदाय के श्रीजी मंदिर से 13 दिसम्बर को किया। सम्पूर्ण नागर समाज बेण्डबाजों और पोथी यात्रा के साथ चल रहा था। सभी घरों के चबुतरे महिला स्वागतार्थियों से परिपूर्ण पुष्प वर्षा कर रहे थे। पोथी यात्रा नागरवाड़ा से निकलकर नीलकंठेश्वर, देवदेवेश्वर, रुद्रेश्वर महादेव, रघुनाथ मंदिर, चन्द्रपोल गेट और गांधी मूर्ति होती हुई कथा स्थल पृथ्वी क्लब पहुंची। इसी के निकट प्रखर वक्ता राजकीय अतिथी श्री पुलकसागरजी महाराज की बांसवाड़ा से विदाई बेला पर संत श्री को मंच पर आमंत्रित किया तथा तिलक लगा कर माल्यार्पण और शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। भागवत कथा स्थल पर बालविदुषी सुश्री वर्षा नागर ने आध्यात्मिक ज्ञान की वर्षा करवाई तो रास्ते में नागर समाज ने भी भजनों से भक्तों का मन मोहने में कोई कसर नहीं रखी। कथा में प्रसंग आते रहे, कृष्ण जन्म में एक वर्षीय बाल स्वरूप कथन याज्ञिक को उसके पिता श्री हिमांशु याज्ञिक मथुरा ले गए वहीं भगवान कृष्ण और मैया रुक्मणी विवाह प्रसंग को बेबी कशी और बेबी किंजल याज्ञिक ने जीवंत किया। कन्या दान में स्व. सेठ सेवालाल याज्ञिक के पोत्र और स्व. भूपतिलाल याज्ञिक के पुत्र श्री कल्पेश और नीरज याज्ञिक ने उपस्थित महिला श्रद्धालुओं को 1100 साड़ियां और पुरुषों को पेंट,शर्ट, शाल भेंट की। सम्पूर्ण आयोजन भव्य और अविस्मरणीय रहा। इसी अवसर पर सेवा के पर्याय-सेठ सेवालाल याज्ञिक फोल्डर (दीपक द्विवेदी द्वारा संपादित) का संतश्री ने विमोचन किया भण्डारे के विशाल आयोजन में सभी भक्तों को आवभगत के साथ भोजन कराया तथा भावभीनी विदाई दी। इस भागवत कथा के पावन दिनों में नागरों के आराध्य देव श्री हाटकेश्वरजी और भक्त शिरोमणी नरसी मेहता को पूरे आयोजन में कहीं विस्मृत नहीं होने दिया। यही नहीं 300 वर्ष पूर्व जूनागढ़ में जन्में और बांसवाड़ा को अपनी कर्मस्थली बनाने वाले वागड़ में नरसी के अवतार संत श्री दुर्लभरामजी में अपनी अर्चना के सुमन चढ़ाने गई और भक्तों से जानकारी हांसिल की। पूरा आयोजन धन्य हो गया।

-सौ. मंजू प्रमोदराय झा
20ए, आशीर्वाद, अम्बामंदिर के पीछे, बांसवाड़ा
मो. 9413947938

डॉ. हरिप्रसादजी नागर का सम्मान

अकलेरा (राजस्थान)।- जिला केमिस्ट एसोसिएशन झालावाड द्वारा जिले के दस केमिस्टो का सम्मान किया गया जिनमे नगर अकलेरा के डॉ. हरिप्रसाद नागर केमिस्ट (दवा विक्रेता) को कोटा के ड्रग इन्स्पेक्टर द्वारा शाला, श्रीफल व प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री नागर ने 1961 में ड्रग लाइसेन्स प्राप्त कर नगर में प्रथम मेडिकल स्टोर खोला गया। श्री नागर आज भी 78 वर्ष की आयु में मेडिकल स्टोर का संचालन भली-भांति सम्पन्न करते चले आ रहें हैं।

प्रस्तुती - कुलेन्द्र नागर
एडवोकेट अकलेरा

विद्या सहयोग कोष में 1000 रु. का योगदान

इन्दौर। श्रीमती उमा जयदेव त्रिवेदी ने अपने पूज्य पिताजी श्री अंबाशंकर जी शास्त्री (त्रिवेदी) की स्मृति में स्व. विद्याधरजी रावल सौ. सरदारी बाई रावल विद्या सहयोग कोष में 1000 रु. का योगदान दिया है। ज्ञातव्य है कि श्री अंबाशंकर जी शास्त्री एम.डी.एच वैद्य, एम.ए. हिन्दी संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त होकर आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी (म.प्र.शासन) के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। आप महर्षि योगी आयुर्वेद फाउंडेशन में भी संबद्ध रहे तथा ज्ञान एवं अनुभव वर्द्धन हेतु हालेण्ड, इग्लैंड, तथा साउथ अफ्रीका की यात्राएं भी की। आपका सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा एवं समर्पण की मिसाल रहा। समाज के जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए आपकी स्मृति में प्राप्त योगदान अवश्य ही स्वर्णिम प्रतिभा के लिए उपयोग होगा।

सेवा निवृत्ति पर बधाई

खण्डवा। श्री चंद्रभानु गजानन्द दीवान उपयंत्री वि./यां. लाइट मशीनरी खरगोन अपने पद पर गरिमामय, उत्कृष्ठ सेवाएं 37 वर्षो तक देकर दि. 31.10.09 को सेवा निवृत्त हुए।

आपके कार्यो की सराहना करते हुए विभागीय साथियों द्वारा उन्हें भावभीनी बिदाई दी गई।

खण्डवा में सभी परिचितो, रिश्तेदारों ने उन्हें सफलता पूर्वक कर्तव्य से मुक्त होने पर बधाई दी।

श्री मेहता का स्थानांतरण

श्री प्रमोद कुमार मेहता, प्रभारी प्रबन्धक, क्षैत्र संचालन, नरसिंहगढ क्षैत्र का स्थानान्तरण भोपाल सहकारी दुग्ध संघ मर्या., भोपाल कार्यालय में हो गया है।

व्यंजन प्रतियोगिता में नागर गृहणियों ने कड़छी कुशलता दिखाई

इन्दौर। 21 दिसम्बर को श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास पर अ.भा. महिला सभा द्वारा आयोजित व्यंजन प्रतियोगिता में नागर समाज की प्रतिभागियों ने कड़छी कुशलता दिखाते हुए निम्नलिखित पुरस्कार जीते हैं-

तिलगुड़ के मीठे व्यंजन-

श्रीमती गायत्री मेहता, श्रीमती मृदुला त्रिवेदी

मक्का के नमकीन व्यंजन

सुश्री अनिता पुराणिक, श्रीमती मंगला मेहता

पाठकों की सुविधा के लिए पुरस्कृत विधियां प्रस्तुत की जा रही हैं।

मक्के के आटे के ढोकले

सामग्री- मक्के का आटा 2 कटोरी, लाल मिर्च स्वादानुसार, हरी मिर्च 4-5 साबुत, हरा धनिया, हींग, नमक, पापड़ खार, जीरा, अजवाइन हरी मिर्च बारीक कटी हुई, तेल तलने के लिये

विधि- मक्के के आटे में तेल को छोड़कर बाकी सभी सामग्री मिला लें। नमक व पापड़ खार दोनों आधा-आधा मिला लें क्योंकि पापड़ खार भी नमक की तरह खारा होता है। अतः दोनों आधा-आधा मिला लें। अब आटे को हल्के गुनगुने पानी से गूंथ लें। आटा रोटी के आटे से थोड़ा नरम गुंथे। आटा लग जाने के बाद बड़ी-बड़ी लोई बनाकर इडली स्टेण्ड में इडली की तरह ही ये ढोकले भी उसमें बना लें गैस पर करीब 15 मि. तक इसे पकाये। ठंडा होने पर इसे काट कर कढ़ाई में तेल चढ़ाकर इसे तल ले या सादे बघार लें।

अब इसे हरा धनिया व नारियल से सजाये व साथ में हरी मिर्च भी तल कर रख लें। टमाटर की चटनी या हरे धनिये में चटनी के साथ परोसे।

-सुश्री अनिता पुराणिक
द्वितीय पुरस्कार

गुडतिल्ली के मोदक

सामग्री- तिल्ली, गुड़, पिसी इलायची, अखरोट, दरदरा कूट,

विधि- तिल्ली को सेककर कूट लें। गुड़ को भी बारीक कर लें। तिल्ली इलायची, अखरोट मिलाकर गुड़ अच्छी तरह मिला लें। हाथ से या सांचे में भरकर मोदक के आकार में बना लें।

ठंड के मौसम के लिये जल्दी बनने वाला, पौष्टिक मिष्ठान्न है। घी भी नहीं हैं न तलने का चक्कर।

-श्रीमती गायत्री मेहता
प्रथम पुरस्कार

गुड़ की तिलपापड़ी

सामग्री- काले या सफेद तिल 1 कटोरी, घी 1 टेबल स्पून, गुड़ कुटा हुआ 3/4 कटोरी

विधि- सबसे पहले तिल्ली को 10मी. के लिये हल्की आंच पर सेक लें अब एक कढ़ाई में घी डालकर उसमें कुटा हुआ गुड़ डालकर गरम करें जब तक कि गुड़ व घी एक न हो जाये। व गुड़ पूरा पिघल जाये। पूरा गुड़ पिघलने के बाद गैस बंद कर उसमें सिकी हुई तिल्ली अच्छी तरह से मिला दें व चक ले या उल्टी कोई भी थाली पर घी लगा कर उस पर तिल्ली को डालकर गोल कर बेलन से बेल ले गरम-गरम ही व बेलकर तुरन्त काट कर ठंडा होने दें। ठंडा होने पर कटे हुए टुकड़े निकाल कर रख लें।

ठंड के दिनों में यह बहुत ही पसंदीदा व पोष्टीक व्यंजन है। व हल्का भी।

-श्रीमती मृदुला त्रिवेदी
द्वितीय पुरस्कार

ढोकला

गुजराती प्रेमी- डार्लिंग मेरे कान में कुछ हल्का, कुछ नर्म, कुछ नमकीन-सा, कुछ मीठा-सा कहो...

प्रेमिका- ढोकला।

नागर कैलेण्डर 2010

नागर कैलेण्डर 2010 आकर्षक साज-सज्जा लिए तैयार है, तथा सुविधाअनुसार इसका वितरण भी शुरु हो चुका है। चूंकि यह कैलेण्डर डाक द्वारा भेजा जाना सम्भव नहीं है अतः स्थानीय संवाददाताओं के हाथों आप तक कैलेण्डर पहुंचाया जा रहा है। 'वाणी' के संवाददाता भी निस्वार्थ सेवा के माध्यम से यह कार्य कर रहें हैं अतः एक कदम आप तथा एक कदम वे बढ़ाकर कैलेण्डर प्राप्त कर लेवें। जैसा कि पूर्व अंक दिसम्बर 09 में प्रकाशित किया गया था कि कैलेण्डर की साज-सज्जा में श्री अखिलेशजी जोशी का विशेष योगदान एवं सृजनात्मकता रही, हम उनके आभारी हैं, साथ ही जिन समाजबंधुओं ने विज्ञापन के माध्यम से कैलेण्डर प्रकाशन में सहयोग दिया उनके भी हम आभारी हैं।

कैलेण्डर प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें-

इन्दौर में- **पूर्वी क्षेत्र-** श्री संतोषजी व्यास, बीमा नगर गेट
पश्चिम-मध्य- 20,जूनी कसेरा बाखल, खजूरी बाजार
दक्षिण- श्री महेश मेहता- सुदामा नगर (गौतमाश्रम के सामने)
श्री आर.के.दवे- 35, धन्वन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपा. दधिची चौराहा
श्री आशीषजी त्रिवेदी-12/1, डॉ. सरजू प्रसाद मार्ग
उत्तर- श्रीमती शारदा मंडलोई- स्कीम नं. 74, विजय नगर,
सुखलिया क्षेत्र- श्री विश्वनाथ व्यास, सुन्दर नगर
खजराना- श्री योगेश शर्मा- खजराना गणेश मंदिर
राऊ- श्री गिरिजाशंकरजी नागर, गांधी चौक
उज्जैन-श्री सुरेन्द्रजी मेहता, दैनिक अवन्तिका, 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग
बेरछा- श्री वंदना शलभ शर्मा- मेन रोड, शर्मा इलेक्ट्रीकल्स, मो. 9926657691
घूंसी- बलरामजी नागर
रतलाम- श्री ओमजी त्रिवेदी-89, टी.आई. रोड, स्टेशन रोड
एवं सभी स्थानीय संवाददाताओं से जो किताब के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है।
कृपया अपने प्रयासों से कैलेण्डर प्राप्त कर अनुगृहित करें।

-सम्पादक

नागर कैलेण्डर 2010 का विमोचन

इन्दौर। गरिमामय समारोह में मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा प्रकाशित कैलेण्डर 2010 का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पं. रामनारायण त्रिवेदी (शिवांजली ट्रस्ट को भूमि दानदाता) थे एवं अध्यक्षता श्रम न्यायाधीश श्री प्रवीण त्रिवेदी ने की। इस अवसर पर मासिक जय हाटकेश वाणी की सम्पादक श्रीमती संगीता शर्मा ने बताया कि इस वर्ष प्रकाशित कैलेण्डर पर कुलदेवता भगवान हाटकेश्वर के भव्य-मंदिरों के फोटो तथा समाज के प्रमुख प्रवचनकारों के सद्वचनों को प्रमुखता दी गई है। समाज की दिवंगत हस्तियों को भी कैलेण्डर के माध्यम से जीवंत किया गया है। कैलेण्डर में समाज द्वारा मनाए जाने वाले तिथि, त्यौहारों को प्रमुख रूप से चिन्हित किया गया है। इस अवसर पर अतिथियों का स्वागत सर्वश्री दीपक शर्मा, योगेश शर्मा, प्रबल शर्मा, पुनीत नागर ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री मनीष शर्मा ने किया तथा आभार प्रदर्शन श्री अखिलेष जोशी ने किया।

नागर ब्राह्मण समाज का राज्य स्तरीय समारोह सम्पन्न

बच्चों ने किया अपनी कला का प्रदर्शन, अनेक प्रतिभाएं हुई सम्मानित

उज्जैन। म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली एवं प्रोत्साहन समिति के तत्वावधान में दो दिवसीय राज्यस्तरीय समारोह आयोजित किया गया।

प्रथम दिवस नागररत्न स्व. श्री विष्णुप्रसाद नागर की स्मृति में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन कालिदास अकादमी में हुआ जिसके प्रायोजक थे मप्र नागर परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास (शाजापुर) एवं समग्र गुजरात नागर परिषद के अध्यक्ष श्री नरेश राजा (अहमदाबाद)।

समारोह में बच्चों ने श्लोक पाठ, फैंसी ड्रेस, गायन एवं नृत्य प्रतियोगिताओं में अपनी कला का प्रदर्शन कर भावविभोर कर दिया। संचालन श्री मयंक शुक्ल एवं कु. प्रेरणा नागर ने किया। कु. सलोनी व्यास ने सरस्वती वदंना प्रस्तुत की। श्री कुश मेहता ने आभार माना।

द्वितीय दिवस विक्रम कीर्ति मंदिर में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि गणेशाचार्य पं.कैलश नागर (इन्दौर) थे। अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र व्यास (शाजापुर) ने की। विशिष्ट अतिथि गांधी नगर (गुजरात) के वरिष्ठ समाजसेवी श्री सुभाष भट्ट, नागर परिषद उज्जैन के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी एवं समिति की संरक्षिका श्रीमती आशा विष्णु नागर थीं।

इस अवसर पर सम्पूर्ण मप्र के चयनित प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। प्रारंभ में ईश वंदना नागर युवक परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री हेमन्त व्यास ने प्रस्तुत की। समिति के अध्यक्ष श्री रमेश मेहता 'प्रतीक' ने संस्था की जानकारी देकर स्वागत भाषण दिया। आय-व्यय की जानकारी कोषाध्यक्ष श्री दिलीप त्रिवेदी ने दी। अतिथियों का स्वागत श्री अभिमन्यु त्रिवेदी, डॉ. अरुणा व्यास, श्री विष्णु दत्त नागर, डॉ. रमाकांत नागर, संतोष जोशी, देवेन्द्र व्यास, कैलाश नागर, लव मेहता, रमेश परोत, श्रीमती प्रेरणा मेहता, विजय शर्मा, विजय मेहता, संजय नागर, सतीश नागर, मनोज नागर, हेमंत त्रिवेदी, गोविन्द नागर, विकास मेहता आदि ने किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी एवं समिति के कोषाध्यक्ष श्री दिलीप त्रिवेदी को सुदीर्घकालीन योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

श्रीमती संगीता विनोद नागर (इन्दौर) द्वारा स्थापित स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार बेरछा (शाजापुर) के शिक्षक श्री महेश नागर को दिया गया। समारोह का संचालन श्री अशोक व्यास (भोपाल) एवं आभार प्रदर्शन सहकोषाध्यक्ष श्री किरणकांत मेहता ने किया।

वरिष्ठ समाजसेवी श्री दिलीप त्रिवेदी सम्मानित

उज्जैन। मप्र नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में वरिष्ठ समाजसेवी एवं समिति के कोषाध्यक्ष श्री दिलीप त्रिवेदी को उनके सुदीर्घकालीन योगदान हेतु सम्मानित किया गया। समाजसेवा के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के रूप में श्री त्रिवेदी प्रारंभ से ही समिति के संस्थापक श्री विष्णुप्रसाद नागर के साथ सक्रिय रहे हैं एवं उन्होंने तन-मन-धन से योगदान दिया है।

श्री दिलीप त्रिवेदी हाटकेश्वर देवलाय ट्रस्ट उज्जैन के भी कोषाध्यक्ष हैं। नागर ब्राह्मण समाज के प्रति उनकी सेवाएं सराहनीय है। वे हाटकेश्वर समाचार के सम्पादक मंडल के सदस्य के रूप में भी अपना योगदान दे रहे हैं।

शिवेश स्वर्ण पदक से विभूषित

पीपलरावां। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. श्री रामरतन शर्मा उज्जैन के पौत्र एवं श्री हरिनारायण नागर, पीपलरावां के नाती तथा श्री मुकेश-मनीषा शर्मा के पुत्र चि. शिवेश शर्मा को गत 25 दिसम्बर 2009 को प्रतिभा-प्रोत्साहन समिति उज्जैन के सौजन्य से आयोजित एक भव्य समारोह में समारोह के अध्यक्ष म.प्र. नागर परिषद अध्यक्ष श्री विरेन्द्र व्यास शाजापुर एवं मुख्य अतिथि प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पं. कैलाशचंद्र नागर, (इन्दौर) ने आशा-विष्णु पुरस्कार अन्तर्गत प्रशंसा-प्रसून, स्वर्ण पदक एवं 200/-रुपए नकद प्रदान कर सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि प्राथमिक स्तर पर पूरे प्रदेश के नागर बालक-बालिकाओं में सतत् 5 वर्ष पाँचवी तक अंक वरीयता अनुसार प्रथम आने पर यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। परिवार एवं समाजजनों ने इस अवसर पर चि. शिवेश को बधाई दी ।

-रमेश मेहता 'प्रतीक'
530, सेठी नगर, उज्जैन

वडनगर में आकर्षण और सुविधाएं बढ़ेगी तो दर्शनार्थियों की संख्या में भी वृद्धि होगी

वडनगर (गुज.)। वडनगर स्थित इष्टदेव श्री हाटकेश्वर की प्रेरणा से अ.भा. नागर परिषद् के अध्यक्ष के नेतृत्व में गुजरात राज्य सरकार द्वारा एक उच्चस्तरीय बैठक का आयोजन वडनगर में 28-10-09 को किया गया। सरकार की तरफ से माननीय कलेक्टर ने वडनगर के विकास खासतौर से श्री हाटकेश्वर महादेव देवालय परिसर के विकास के सम्बंध में परिषद के रचनात्मक कार्यक्रम एवं योगदान की प्रार्थना की। समग्र नागर की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था की तरफ से इष्टदेव के कार्यों में सहयोग यह हमारा पवित्र फर्ज है। वडनगर के पौराणिक एवं आध्यात्मिक विकास के साथ नागर समाज के पूर्वजों से सम्बद्ध यहां अपने इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर प्राणप्रतिष्ठित है और वडनगर में माँ उमाजी के आराधना धाम है। इस संस्था के साथ नागर वडनगर आने के लिए आकर्षित है। यह हमारे वंशीय संस्कार कह सकते हैं। परन्तु कुछ वर्षो से हाटकेश्वर महादेव रुठ गए हो ऐसा लगता है क्योंकि छोटे-छोटे झगड़े, ईर्ष्या, अहम् का टकराव यहां होता है। विभिन्न कार्यकर्ता समाज के वरिष्ठ लोग एवं ट्रस्टियों के प्रयास से भी ये झगड़े खत्म नहीं हो रहे।इसके परिणाम स्वरूप वडनगर आने वाले दर्शनार्थियों की संख्या में कमी होती जा रही है। भोजन, विश्राम की जगह नहीं होने व अन्य सुविधा न होने के कारण भी दर्शनार्थ नहीं आ पाते। कानूनी विवाद एक या अन्य व्यक्तियों की भावना या इच्छा इस कार्य में अवरोधक बनते हैं। समस्त नागर समाज इष्टदेव के विकास कार्यों की तरफ उदासीन बना हुआ है। तब अकेला ट्रस्टि या संस्था क्या कर सकते हैं। दूसरी तरफ राज्य सरकार समग्र वड़नगर के सार्वजनिक विकास की दिशा में गतिशील है तब अगर हाटकेश्वर परिसर अविकसित रहे तो वडनगर के विकास का कोई वजूद नहीं है। वडनगर या हाटकेश्वर सांस्कृतिक दृष्टि से सिक्के के दो पहलू हैं इस संदर्भ में सरकार भी चिंतित है। दूसरी तरफ यह नागर समाज की चिंता का विषय न बने और हम इससे अंजान रहे यह शर्मनाक है। अब इसका या उसका दोष ढूंढने का समय नहीं है, थोड़ी ही दूरी पर विराजमान माँ उमिया के आराधकों की एकता और श्रद्धाभक्ति देखने लायक है। जबकि जिन हाटकेश्वर भगवान के हम उपासक है उनकी धर्मपत्नी सती उमा का ही यह मंदिर है। माँ भगवती दक्ष प्रजापति की सुपुत्री थी जिनका नाम उमा था, वह भी दूसरे जन्म में पार्वती स्वरूप में प्रकट हुई तब शिव-पार्वती विवाह के समय अयाचक ब्राह्मण (नागर) के रूप में हमारा प्रादुर्भाव हुआ ये समस्त बातें हमारी उदासीनता को झकझोरने और समस्त नागर समाज में भावनात्मक एकता लाने के लिए है। अ.भा. नागर परिषद को कोई ट्रस्ट हड़प करने में रूचि नहीं है पर जो इष्टदेव की अवमानना सरकार की तरफ से होगी तो समस्त नागर समाज का नेतृत्व करने में हम पीछे नहीं रहेंगे। संस्था के हितों से इष्टदेव बड़े हैं। इष्टदेव तो समाज,संस्था सबसे बड़े हैं। समस्त नागर समाज फिर एक हो जाएं हम वही चाणक्य के वंशज हैं जिनके खून में राजनीतिक केसरी रंग घुला हुआ है। जो भी व्यक्ति इष्टदेव में श्रद्धा रखता हो वह अहमदाबाद के मंदिर परिसर में एकत्र होकर प्रतिज्ञा लेकर अपना भविष्य तय करते हैं। कोर्ट-कचहरी के आदेश को सर-माथे पर लेकर एक होकर इष्टदेव के परिसर के विकास में आगे बढ़ते हैं।

20 दिसम्बर 09 को अहमदाबाद में एक धर्मसभा का आयोजन हुआ। जिसमें विवाद में फंसे समाज के कार्यकर्ता आए और उन्हें धर्मसभा की ओर से समझाईश दी गई कि आगे से विवाद न करें। और समाजहित में आगे बढ़ते रहें। समस्त हितचिंतक श्री जितेन्द्रभाई नानावटी, श्री चेतनभाई बूच, श्री दिलीप भाई मांकड़, श्री कांतिभाई मेहता, श्री रजनी भाई मेहता, महाश्वेता बेन वैद्य, ज्योतिष भाई बक्षी, श्री मनुभाई मेहता, श्री जयराज भाई मेहता, श्री अमलभाई ध्रुव आदि।

एक बजा था

पुलिस ऑफिसर - जब आपके घर चोरी हुई थी तो उस वक्त कितने बजे थे।

मकान मालिक बोला- जी, दो बजे थे, एक कमर पर और एक सिर पर।

पुलिस अफसर- मेरा मतलब है कि घड़ी में कितने बजे थे।

मकान मालिक- जी, घड़ी पर भी एक बजा था।

सुयश कु. मीना मेहता

कु. मीना मेहता, सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार/श्रीमती सुमन मेहता भोपाल ने वर्ष 2008-09 मे आरजीपीवी द्वारा आयोजित परीक्षा -बी.ई. (आई.टी. ब्रांच) मे प्रथम वर्ष मे ट्रिनिटी इंस्टीट्यूट ऑफ सांईस एण्ड टेक्नोलॉजी, भोपाल से उक्त परीक्षा में 78 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर सम्पूर्ण कालेज की थर्ड टापर रही है। इसके साथ ही कु0 मीना कों शतप्रतिशत उपस्थिति का अवार्ड भी कालेज द्वारा ससम्मान प्रदान किया गया।

सुयश कु. पारुल मेहता

कु. पारूल मेहता बी.ई. (आई.टी.) सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार एवं श्रीमती सुमन मेहता, की नियुक्ति आईबीएम, मल्टीनेशनल कम्पनी, बैंगलोर में सीनीयर साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हाल ही में हुई है। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व आप (एच.पी.) हेवर्ड एण्ड पेकेर्डस् कम्प्यूटर-प्रिन्टर- निर्माता अमेरीकन मल्टीनेशनल कम्पनी मे साफ्टवेयर डेव्हलेपर इंजीनियर के पद पर कार्यरत थी। यहॉ उल्लेखनीय है कि आपने वर्ष 2005 मे ही इंजीनियरिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की है और इतने अल्प समय मे ही इतने उच्च स्थान को प्राप्त कर लिया है।

-प्रमोद कुमार मेहता
एफ-1/1 (ग्यारह सौ क्वाटर्स)
अरेरा कालोनी भोपाल
0755-2424550 सेल 9827830430

कुर्यात सदा मंगलम्

दिनांक 10-12-2009

चि. सचिन
सुपुत्र- श्री रमेशचन्द्र शर्मा
झालावाड़ (राज.)

सौ.कां. मेनका
सुपुत्री- श्री कुलेन्द्र नागर
अकलेरा (राज.)

दिनांक 2-12-2009

चि. चिराग
सुपुत्र- श्री धीरेन मंकोड़ी
देवास (म.प्र.)

सौ.कां. नूतन
सुपुत्री- श्री मेघशंकर नागर
सवाईमाधोपुर (राज.)

दिनांक .....

चि. सुमीत व्यास
सुपुत्र- विजयकृष्ण व्यास
मक्सी

सौ.कां. दिप्ती
सुपुत्री- श्री रमाकांतजी उपाध्यक्ष
जबलपुर

आत्मज्ञान

लघुकथा

प्यारेलाल ने जीवन भर जोड़-तोड़ करके चापलूसी कर के रिटायरमेन्ट के करीब आते-आते सारी भौतिक सुविधाएं जुटा ली थी। अब दिन-रात टीवी चैनलों पर आत्म ज्ञान की चर्चा सुनते-सुनते उन्हें भी लगा कि आत्मज्ञान भी जरूर प्राप्त करना चाहिये।

वे एक संत के पास पहुंचे। ये संत लोभ लालच से दूर थे। उस समय मई-जून की धूप पूरे शबाब पर थी पर संत ने समय दिया था अतः दिल कड़ा कर के पहुंच ही गए।

संत ने पूछा- 'क्या चाहते हो?'

'तत्व ज्ञान पाना चाहता हूं।' वे बोले

संत ने कहा- 'जाओ, और दोनों हाथ ऊपर उठाकर बाहर धूप में खड़े हो जाओ।

संत की आज्ञानुसार प्यारेलाल धूप में जा कर खड़े हो गए। थोड़ी ही देर में वे थक गए, पसीने से लथपथ, धूप की तेजी से बेचैन, संत के पास पहुंचे। वहां धूप में खड़े हुए तुम्हें कैसा अनुभव हो रहा था। संत ने पूछा।

मैं अपने को दुनिया का सबसे बड़ा अज्ञानी समझ रहा था।

बहुत अच्छे। संत ने कहा- जब आदमी खुद को अज्ञानी समझ ले तब उसका हृदय शुद्ध हो जाता है और ज्ञान प्राप्त करने योग्य हो जाता है। अब तुम मेरे शिष्य बनकर आश्रम में रह सकते हो।

-आशा नागर
सी-12/9 ऋषि नगर उज्जैन फोन 2521157

चुस्ती और सुस्ती

लघुकथा

जब बच्ची ने नानाजी से यह कहा कि वे आज अपने स्कूल का काम नहीं करेंगे तो नानाजी ने पूछा, आज क्या करेंगे?

सभी का एक ही उत्तर था, आज तो हम कहानी सुनेंगे।

तो फिर सुनो कहा, 'दो बहिनों की'

समय की दो बेटियां है। बड़ी का नाम है चुस्ती और छोटी का नाम है सुस्ती। कहने को तो दोनों सगी बहिनें है किन्तु दोनों के गुण और स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर है। जब भी कोई काम माँ करने को कहती है तो सुस्ती का एक ही जवाब होता है, बस थोड़ी देर रुक जाओ माँ। और चुस्ती जो है न वह मानों इसी ताक में रहती है, कब कोई काम बताए और कब वह उसे पूरा करे। इसीलिए तो सुस्ती के सभी काम आधे-अधूरे ही पड़े रहते है, जबकि चुस्ती के सभी काम बिलकुल ठीक समय पर पूरे हो जाते हैं। यही नहीं वह तो आने वाले काम करने के लिए भी तैयार रहती है। इसी कारण सभी बच्चों के माता-पिता यही चाहते हैं कि चुस्ती उनके बच्चे को अपनी मित्र बनाए, उसके साथ रहें और सुस्ती से दूर ही रहें।

इन दोनों की मां का नाम है गति। वह तो निरंतर चलती ही रहतीहै। न तो वह स्वयं ही कहीं ठहरती है और न ही अपनी बेटियों को कभी रुकने देती है। इसीलिए रोज सुबह होने के साथ ही वह इन दोनों को आवाज देकर बुलाती है और आदेश देती है, चुस्ती-सुस्ती जाओ, जाकर बच्चों को नींद से जगा दो।

संकलित-श्रीमती शारदा मंडलोई

कु. रेणुका नागर
सुपुत्री- बालकृष्ण-शीतल नागर
20 जनवरी 98
मक्सी जि. शाजापुर
मो.98265-08504

मा. सर्वेश रावल
(सुपुत्र- आदर्श-सुनीता रावल)
दिनांक 1-जनवरी 2009
सुपौत्र- पुरूषोत्तम-पुष्पा रावल
चाचाजी- आनन्द रावल
समस्त परिवार बैंक कालोनी इन्दौर
(मो.) 9300418242

कु. प्रियल नागर
(सुपुत्री- आलोक-सीमा नागर)
19 जनवरी
नागर परिवार उज्जैन, देवास
मेहता परिवार
महू, रोहित, अंकित, प्राजंला, सलोनी, शालिनी, भव्य, जिया।

मा. आर्य शर्मा
सुपुत्र-विशाल शर्मा-पूजा शर्मा
29 जनवरी
शुभाकांक्षी- समस्त शर्मा परिवार
कोटा, रावल परिवार खजराना
कोटा (राज.) मो. 09351669760

मा. रजत मेहता
16 दिसम्बर
-गायत्री-नरेन्द्र, जयंत, प्रदीप, रेणु, चानु, अर्पणा, त्रुति, नताशा, अपूर्व, दक्ष, अनवि नाना नानी

चि. हर्षित नागर
5 जनवरी 1988
सुपुत्र- कुलेन्द्र-गायत्री नागर अकलेरा (राज.)

बाबा का प्राणायाम

99 साल का एक आदमी स्वर्ग की रौनक और अप्सरा देख कर बोला, ये बाबा और उनके प्राणायाम के चक्कर में न पड़ा होता तो यहां पहले ही आ गया होता।

जन्मदिन की बधाई

मानव-जीवन में अनूठा, खुशियों भरा, आनंदित एक दिन
'जन्म दिन' आत्म चिंतन का
श्रीमती कांतू बेन दवे (राजकोट-गुजरात) 1 जनवरी
कुमार सत्यव्रत जाधव (इन्दौर) 23 जनवरी
श्री वसन्त कुमार जोशी (इन्दौर) 23 जनवरी
श्री कौशल दवे (राजकोट, गुजरात) 29 जनवरी
श्रीमती सोनल-विलियम (अमेरिका) 31 जनवरी
(सुपुत्री - स्व. श्री सत्यम जोशी)
स्व. श्रीमती संध्या पी.जोशी (इन्दौर) जयंती 26 जनवरी
इन्दौर के पी.जोशी, श्रीमती जया नागर, श्री प्रदीप जाधव,
परिवार महू के तिवारी परिवार की ओर से यथायोग्य।

विवाह वर्षगांठ की बधाई

परिणय वर्षगांठ

1. श्रीमती अंजना पुराणिक - श्री डॉ. गणेशराम पुराणिक 20.1.09
2. श्रीमती चारूमित्रा (जोशी) जाधव- श्री प्रदीप जाधव 21.1.09
3. श्रीमती अनु (कृपाली दवे) जोशी - श्री अमित जोशी 30.1.09

विजय, विकास, प्रगति पथ पर अग्रसर दाम्पत्य जीवन खुशहाल आनन्दमय की शुभकामनाओं के साथ बधाईयां

-पी.आर. जोशी एवं श्रीमती जया नागर तथा श्री तिवारी परिवार की ओर से
528, उषा नगर एक्सटेंशन/54, प्रकाश नगर, इन्दौर/1027, माणक चौक, महू

विवाह वर्षगांठ की बधाई

श्री प्रदीप-श्रीमती चारूमित्रा जाधव
परिणय वर्षगांठ
21 जनवरी

नताशा-अपूर्व वोरा
(25 दिसम्बर)
शुभाकांक्षी- शर्मा, मेहता परिवार
इन्दौर फोन 4060554

वैवाहिक वर्षगांठ की बधाई

शैलेष - मोनिता जोशी

दिनांक 22 जनवरी 1999

शुभाकांक्षी- शिव-सुशीला जोशी (पापा-मम्मी)
हरिवल्लभजी-श्यामा नागर (बुआ-फुफाजी)
अशोक-दुर्गेश नागर,
ओमप्रकाश-हेमलता नागर (मामा-मामी)
संतोष-पदमा जोशी (भैया-भाभी)
मनोरमा नागर (सासूजी)
मनीष नागर, कविता नागर, नागदा,
कमला नागर (नानीजी)
सुनील-योगिता दवे (रतलाम)
चिन्मय-विनिता पंडया (अहमदाबाद)
विकास-ममता शर्मा राऊ, आशीष-ज्योति नागर (भाई)
हर्षिता, आज्ञा, राज जोशी (पुत्र-पुत्री)
स्टेशन रोड, राऊ फोन
2856515, मो. 9977237237, 9424053997

जन्मदिन की बधाई

कु. आज्ञा जोशी
(सुपुत्री- शैलेश-मोनिता जोशी)
20 जनवरी 2002
शिव-सुशीला (दादा-दादी)
हरिवल्लभजी-श्यामा नागर (फुफाजी-बुआजी)
मनोरमा नागर (नानीजी) मनीष नागर (मामा) कविता नागर (मौसी)
हर्षिता-राज भाई बहन एवं परिवार
2856515, मो. 9977237237

वैवाहिक (युवक)

विवाह विच्छेदित 37 वर्षीय गौर वर्ण, मृदुभाषी, स्मार्ट, कद 5,10, कारपोरेट क्षेत्र की प्रतिष्ठित कम्पनी में कार्यरत इंजीनियर युवक हेतु सुन्दर, सुशील, सुशिक्षित, सुसंस्कृत और गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए। फोटो, जन्मपत्री तथा बायोडेटा भेजें।

सम्पर्क- डॉ. शरद नागर, 5-530 विकास नगर, लखनऊ - 226022
फोन - (0522) 2769424, मो. 9198125131

हेमंत छगनलाल नागर
जन्म दि. 21.04.91 रात्रि- 8.15 उज्जैन
शिक्षा- बी.ई. द्वितीय वर्ष
सम्पर्क- 28, आशाराम कॉलोनी ए.बी.रोड मक्सी जि. शाजापुर
फोन- 233948

अखिलेश चंद्रभानु दीवान
जन्म दिनांक 20.07.1982
(समय रात्रि 1.05, खण्डवा)
शिक्षा- बी.कॉम.एम.बी.ए. फायनेंस
कार्यरत प्रायवेट कंपनी (वापी) में
सम्पर्क- 248, हाटकेश्वर वार्ड खंडवा
फोन (0733) 2223067

वैवाहिक (युवती)

कु. स्वाति निर्भयराम नागर

जन्म दि. 28.12.1986 (8.30ए.एम.) बलरामपुर (उ.प्र.)
शिक्षा एम.एस.सी. बॉटनी
कार्यरत- टर्मिनल ऑपरेटर शेयर मार्केट
सम्पर्क- 09454175048, 09450173981

कु. पूजा दिनेश नागर
जन्म दि. 30.05.1988 (3पीएम.)
शिक्षा- बी.एस.सी. एम.बी.ए. अध्ययनरत
सम्पर्क- 10-8, उर्दूपुरा नागरसेरी उज्जैन मो. 9827637647
मो. 9977506659

कु. रचना राधेश्याम दीक्षित
जन्म दि. 9.11.1980 (8.30पीएम) खण्डवा
शिक्षा- सी.ए.
कार्यरत- चड्ढा एंड चड्ढा
समपर्क- 21, मेडीकल कालोनी खंडवा
फोन- 0733-2249078

कु. स्तुति व्यास
जन्म दि. 22.09.1987
(समय-3.28 पी.एम. बनारस)
शिक्षा बी.एस.सी (कम्प्यूटर)
कार्यरत- एच. सी.एल नोएडा
समपर्क- 0522-2417287, 09453049430

कु. जूही अनिल मेढ
उम्र 23 वर्ष
शिक्षा- बी.कॉम.सी.एस. (दिल्ली)
सम्पर्क सूत्र बी 2-2 पी.डबल्यू. डी. फ्लेट, हेवलकरोड कॉलोनी, लखनऊ- (उ.प्र.)
मो. 9839215830, 9839412119

कु. मिनी राकेश पाठक
जन्म दि. 18.05.1984
शिक्षा- बी.ई.आय.टी.
कार्यरत- बैंक ऑफ न्यूयार्क पुणे
सम्पर्क- राकेश नारायण राव पाठक, रेलवे मेल गार्ड एम.बी.108 बी 12, बंगला, इटारसी, जि. होशंगाबाद मो. 9826460354

[illegible] मल त्रिवेदी

[illegible] (हिन्दी), बेसिक कम्प्यूटर
[illegible] -1985 (सुबह 6.50) इन्दौर
[illegible] 3 इंच
[illegible] लिक, वडनगरा नागर ब्राह्मण
सम्पर्क- चौराचौक, नागरवाड़ा, बांसवाड़ा (राजस्थान)
मो. 09252272308

LIC

भारतीय जीवन बीमा निगम

कार्यालयः सिविल लाईन्स, खण्डवा 450 001 (म.प्र.)

उज्जवल एवं सुरक्षित भविष्य हेतु

भारतीय जीवन बीमा की अभिनव योजनाओं की विश्वसनीय जानकारी हेतु

संजय पंडित (अध्यक्ष क्लब सदस्य) 34-बी, सांईनाथ कालोनी ए सेक्टर तिलक नगर के पास, इन्दौर फोन 0731-2904072, मो. 94248-32201
शशिकांत पंडित एवं श्रीमती कामिनी पंडित विगत 29 वर्षों से कार्यरत मो. 94259-50023, 96694-00322 काल मुखी (खंडवा)
दिव्यकांत पंडित एवं श्रीमती अपर्णा पंडित आंचलिक प्रबन्धक क्लब सदस्य नागदा जिला उज्जैन मो. 94259-86344, 9827275268

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)

हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान

(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)

10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 3097990, मो. 9425963751

स्वयं के व्यवसाय की होड़ नहीं होती

बहुमुखी प्रतिभा की धनी-सौ.ममता मेहता

इन्दौर। 'सफलता एक खेल की तरह हैं जिसे आप जितनी बार खेलते हैं उतनी बार सफल होते हैं और जितनी बार सफल होते हैं, उतनी सफलतापूर्वक उसे खेलते हैं।' उपरोक्त कथन को जीवनदर्शन का आधार बनाकर अन्यों की प्रेरणास्पद बन गई शख्सियत श्रीमती ममता मेहता से आपका परिचय कराते हैं। श्रीमती मेहता ने सन् 1992 में इन्साईड डेकोरेशन क्लास की शुरूआत की जिसमें बच्चों तथा महिलाओं को विभिन्न कलात्मक गतिविधियो का प्रशिक्षण दिया जाता था। संस्था द्वारा ड्रांईग, सभी प्रकार की पेंटिंग तथा बेकिंग आदि कलाओ का प्रशिक्षण दिया जाता रहा। बाद में संस्था का स्वरूप परिवर्तन हुआ और ममता'ज प्रेटी वुमन ब्यूटी क्लीनिक प्रारम्भ हुआ। जिसमें बालों तथा त्वचा से सम्बन्धित समस्याओं का उपचार सफलतापूर्वक किया जाता है। साथ ही ब्राइडल पैकेज भी उपलब्ध है। यहाँ (एरोबिक्स, कोरियोग्राफी, विभिन्न प्रकार के डांस, सालसा, हिप-हाप आदि) किड्स समर केम्प, बोंसाई कार्यशाला का संचालन भी किया जाता है। साथ ही साथ विभिन्न अवसरों पर डांस कार्यक्रम हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। श्रीमती मेहता के अनुभव एवं विशिष्टता के साथ आपके व्यवसाय की पहचान बन गई है। कई व्यक्तित्व समाज में इस प्रकार है जो अपने जीवन से अन्य लोगों को भी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन देते हैं श्रीमती मेहता भी उन्हीं में से एक है। आपने स्नातकोत्तर तथा बी.एड. की शिक्षा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से पूर्ण की पश्चात शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक अवसर आए परन्तु उन्होने स्वयं के व्यवसाय को ही प्राथमिकता दी ताकि अपनी सृजनात्मकता को कलात्मक रूप में प्रस्तुत कर सकें। स्वयं के व्यवसाय के साथ पारिवारिक दायित्वों को भी सफलता पूर्वक निर्वाह किया।

बकौल श्रीमती ममता मेहता मेरी सफलता के पीछे मेरे पति श्री दिलीप मेहता दोनो पुत्रों-पुत्रवधुओं का सहयोग है तथा मेरे पुर्वजो का आशीर्वाद। कर्मठ, स्वावलम्बी, गहरी सोच रखने वाली, मिलनसार एवं प्रगतिशील ममता को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ. रजनी मेहता
186, रेडियो कॉलोनी, इन्दौर
फोन 2710110

वाद-विवाद प्रतियोगिता-6

विषय - क्या समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने की शुरूआत सम्पन्न समूह वर्ग से होना चाहिए।

कुरीतियां क्या है? हम नागर जन कई वर्षो से मृत्युभोज, मामेरा प्रथा आदि को कुरीति मानते चले आ रहें हैं तथा सामाजिक सभाओं में भाषण के दौरान भी इन कुरीतियों के खिलाफ बोलकर तालियाँ बटोरते हैं लेकिन मेरा ध्यान अब नई तरह की कुरीतियों की तरफ है। जहाँ तक मृत्युभोज का सवाल है तो ज्यादातर समाजजन अब उसे हैसियत अनुसार ही करने लगे हैं इसमें दिखावे की भावना कहीं भी परीलक्षित नहीं होती। वर्तमान में जो कुरीति पनपी है वह है विवाह समारोहों में अनाप-शनाप खर्च । भोजन से ज्यादा खर्च सजावट में.. इस दिखावे की प्रवृत्ति से समाज का क्या भला होता है? उल्टा आने वाले मेहमान सकारात्मक पक्ष के बजाय जो नकारात्मक होता है उसी का जिक्र करते हैं जैसे पूरा भोजन अच्छा बना उसका जिक्र नहीं और एकाध चीज खराब बनी तो उसकी आलोचना कर डालते हैं ऐसे में मेजबान द्वारा किया गया सारा व्यय मिट्टी में मिल जाता है। सामाजिक सभाओं में हम एक तरफ सामूहिक विवाहों को बढावा देने की बात करते हैं जबकि दूसरी तरफ महंगी से मंहगी शादियां करते हैं यह समाज का सम्पन्न वर्ग ही तो है जो एक तरफ समाज का नेतृत्व भी करता है तथा दूसरी तरफ कुरीतियों को बढ़ावा भी देता है। आप भले ही सामूहिक विवाह न करो किन्तु एकल विवाह में भी धन का प्रदर्शन मत करो। बल्कि आप यदि सामूहिक विवाह में शामिल होगें तो अन्य लोगों के लिए भी सामूहिक शादियां गौरव का विषय बन जाएगी। यदि विशाल पैमाने पर भी एक विवाह के बजाय पाँच या ग्यारह परिणय एक साथ किए जाए तो वे सस्ते हीं पडेंगे। अतः कुरीतियों को मिटाने की शुरूआत सम्पन्न वर्ग को ही करना पड़ेगी और यह क्या हम पुरानी कुरीतियों की जड़ से उखाड़ते-उखाड़ते नई कुरीतियों के जाल में फँस गए और हमें पता भी न चला हम नागर दूसरी जातियों में विवाह करने लगें हैं वर्तमान में यह सब भले ही सुखद लगे किन्तु अंततोगत्वा इसका हश्र अच्छा नहीं होगा। अतः इस कुरीति पर भी रोक लगे। ऐसा देखा जा रहा है कि हमारे समाज का पढा-लिखा वर्ग भी युवक-युवती में विशेष मांग करने लगा है। इंजीनियर वर इंजीनियर वधु की मांग कर रहा है, डॉक्टर को डॉक्टर ही चाहिए और निश्चित रूप से यह प्रवृत्ति भी अंर्तजातीय विवाह को बढावा दे रही है, जहाँ तक ब्राह्मणों के एक होने तथा आपस में विवाह सम्बन्ध करने का प्रश्न है तो ठीक है, परन्तु बनते कोशिश अंर्तजातीय विवाहों से बचना चाहिए। हम ब्राह्मणों में सर्वश्रेष्ठ भगवान हाटकेश्वर की संतानें हैं हमें धन के अपव्यय एवं जाति के गौरव की रक्षा करना ही पड़ेगी। सम्पन्न वर्ग भी कुलीन एवं अपनी जाति की गुणवान लडकी से रिश्ता जोड़े भले ही उसका परिवार कम सम्पन्न हो। विवाह सम्बन्धों में शर्ते एवं विशेष मांग खत्म होना चाहिए। पढाई, नौकरी एवं सम्पन्नता को चयन का दायरा बनाने के बजाय गुणों को महत्व दिया जाए तभी अंर्तजातीय विवाहों पर रोक लगेगी तथा समारोहों में अपव्यय किया जाने वाला धन समाज कल्याण में खर्च किया जाना चाहिए। समाज के सम्पन्न वर्ग आगे आए तथा समाज के अंदर ही अच्छे रिश्ते जोड़ने पर जोर दें.... सामुहिक विवाहों को बढावा दें... समारोहों में अपव्यय को रोके तो देखेंगे कि कितनी जल्दी कुरीतियों का नाश होगा और हम उज्जवल कल की और बढ़ सकेंगे।

वाद-विवाद प्रतियोगिता -5

के बारे में जो विचार दिसम्बर 09 के अंक में प्रकाशित हुए थे उनमें प्रथम पुरस्कार के सम्बन्ध में सर्वाधिक मत श्री रमेशचन्द्र नागर विज्ञान नगर कोटा को प्राप्त हुए हैं उन्हें 500 रु. का प्रथम पुरस्कार भेजा जा रहा है। ज्यादा से ज्यादा नागर बंधु वाद-विवाद प्रतियोगिता के माध्यम से चलाए जा रहे विचार क्रांति अभियान में शामिल हों ... वे भी जो लिखना नहीं जानते.. अपने विचारों को किसी भी तरह टूटी-फूटी भाषा में हमारे तक भेज दें हम उन्हें सुधार कर प्रकाशित करेंगे। हम उत्तम लेखन के बजाय सर्वोत्तम विचारों को महत्व देंगे तथा उन्हें कार्यरूप में परिवर्तन करने का प्रयास करेंगे।

-संगीता शर्मा

प्रकाश शर्मा
फार्मासिस्ट
मो. 98932-57273

फोन 4055227

Megha Shree MEDICOES
(CHEMIST & DRUGIST)
D.L.No.: 20-21/126
GOVT. APPROVED MEDICAL SHOP

वातानुकूलित शॉपी

आयुर्वेदिक चिकित्सालय के सामने, 38, स्टेशन रोड, राऊ (इन्दौर)

वाद-विवाद प्रतियोगिता-6

धन का दुरुपयोग रोक कर उसे जनकल्याण में खर्च किया जाए

हमारे समाज के महापुरुषों ने समय-समय पर समाज में फैली भ्रान्तियों और कुरीतियों को दूर करने के प्रयत्न किये हैं। किन्तु कोई भी समाज तभी कुरीतियों से पूरी तरह मुक्त हो सकता है जब समाज का हर सदस्य और हर वर्ग इन बुराईयों को दूर करने का संकल्प ले। किन्तु होता यह है कि समाज का अमीर वर्ग जरूरत से ज्यादा खर्च कर समाज की कुरीतियों को बढ़ावा देते हैं, और मध्यम व निम्न वर्ग को मजबूरी वश समाज के नियमों को मानना पड़ता हैं। समाज में कई ऐसे नियम है जिन्हें बदला जाना आवश्यक है जैसे मृत्युभोज, स्मृति चिन्ह बांटना, विवाह आदि समारोह में पेरावणी, मामेरा व जरूरत से ज्यादा व्यय करना आदि। ऐसे व्ययों को अमीर वर्ग तो खुशी-खुशी वहन कर लेते हैं किन्तु मध्यमवर्गीय समाजजनों को सिर्फ समाज में अपनी प्रतिष्ठा बचाने के चक्कर में उधार लेकर भी इस तरह का व्यय करना पड़ता है। इस तरह आयोजन कम करने के कुछ उपाय -

1. विवाह में अनावश्यक खर्च रोकने हेतु सामूहिक विवाह के प्रचलन को बढ़ावा देना समाज के सभी वर्गों के लिये अति आवश्यक है।

2. समाज के अनेक सदस्य मृत्युभोज का त्याग कर चुके हैं क्यों न आप भी उनका अनुसरण कर इस रिवाज को समाप्त कर इस खर्च को समाज हित में देकर अपने दिवंगत परिजन का नाम अमर करें जिससे उनकी आत्मा को शांति मिले।

3. प्रत्येक सामाजिक कार्य में एक निश्चित राशी समाज के कुल देवता श्री हाटकेश्वर मन्दिर वडनगर के लिये निश्चित किया जाना भी आवश्यक है, क्यों? इस जवाब के लिये आपको एक बार अपने कुल देवता के दर्शन लाभ लेने का सौभाग्य प्राप्त करने हेतु वडनगर गुजरात की यात्रा करने जाइयेगा आपको जवाब मिल जायेगा।

4. पारिवारिक समारोह जैसे जन्मदिवस, विवाह वर्षगांठ मनाने में जरूरत से ज्यादा खर्च करने से अच्छा है कि कोई धार्मिक या सामाजिक कार्य में किया जाए या अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम में दान कर अपने धन का सदुपयोग किया जाये।

चूंकि समाज की कुरीतियों को बढ़ावा सम्पन्न और समृद्ध वर्ग द्वारा दिया जाता है। इसलिये इन कुरीतियों को समाप्त करने की शुरुआत भी उन्हें ही करना चाहिये।

-श्रीमती लीना राजेश नागर,
झाबुआ मो. 94240-64104,94251-02276

समाज से ऊपर नहीं सम्पन्न वर्ग

सम्पन्न समृद्ध वर्ग हर समाज के स्तम्भ है। समाज में उनकी पेठ होती है उच्च दृष्टि से देखा जाता है। समाज के गणमान्य लोगों में उनका सम्मान होता है समाज के सम्मानीय पद पर आसीन होते हैं उनके द्वारा समाज को दिया गया निर्णय, आदेश सुप्रीम कोर्ट का आदेश होता है। गरीब वर्ग उनके निर्णय का विरोध करने कर साहस नहीं कर सकता चाहे निर्णय गलत ही क्यों न हो।

कुरीतियों के मुख्य स्त्रोत यह सम्पन्न समृद्ध वर्ग ही होते हैं। अतः समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने का सामाजिक दायित्व भी इसी वर्ग का होता है। सम्पन्न समृद्ध वर्ग में चाहे कितनी बुराईयां हो सभी लोग उनकी अनदेखी करते है। सच्चाई को प्रकट करने की हिम्मत नहीं कर सकते। और यदि कोई विरोध करता है तो उसे समृद्ध वर्ग का कोप भाजन बनना पड़ता है।

बाल विवाह, विधवा विवाह, पुनर्विवाह, मृत्युभोज शराब सेवन, नोनवेज, जाति प्रथा खर्चीली विवाह व्यवस्था दहेज, भ्रष्टआचरण धार्मिक उन्माद आदि कुरीतियां है जो सभी समाजों में कमोबेश व्याप्त है। समय के साथ-साथ और शिक्षा के प्रभाव से समाज में काफी जागृति आई है और धीरे-धीरे हर समाज इन कुरीतियों को त्यागने की कोशिश में है।

यदि सम्पन्न समृद्ध वर्ग समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने का बीड़ा उठाये तो समाज में व्याप्त कुरीतियां काफी हद तक खत्म हो सकती है। बशर्ते कि पहले सर्वप्रथम उन कुरीतियों को अपने परिवार से खत्म करने की शुरुवात करने का प्रयास करना होगा चाहे परिवार में इसका विरोध क्यों न हो। एक उदाहरण पेश करना होगा ताकि गरीब वर्ग उसका अनुसरण अनुगमन करें सभी मार्ग का अनुगमन करें। सही पद चिन्हों पर चलने का मानस बनाये, दबाव बनाया जाये। और सम्पन्न समृद्ध वर्ग की उपस्थिति में सामुहिक निर्णय लेकर कुरीतियों को खत्म करने का प्रयास हो तभी समाज में जागरूकता आयेगी। लोगों की सोच में बदलाव आयेगा। भावी पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिलेंगे। उनकी उन्नति होगी। वे समाज के सामने उदाहरण पेश करेंगे, इस प्रकार समाज में फैली गंदगी की सफाई होगी। इसके लिए प्रबल दृढ़ इच्छा शक्ति की आवश्यकता होगी। सम्पन्न समृद्ध वर्ग को यह सोचना होगा कि आज समाज को क्या दे रहा है। समाज की उन्नति हो रही है अथवा अवनिति हो रही है। यह सब देखना समृद्ध वर्ग का उत्तरदायित्व है जब समाज का पतन हो जायेगा तो सम्पन्न समृद्ध वर्ग भी अछूता नहीं रहेगा। उनका भी पतन होगा। क्योंकि समाज के बिना उनका कोई अस्तित्व नहीं होगा। इसलिए सम्पन्न समृद्ध वर्ग उस भुलावे में नहीं रहे कि समाज में हम सब कुछ है हम ही समाज के कर्णधार है हमारे बिना समाज के सम्पन्न वर्ग पंगू है। समाज समाज है बिना समाज के सम्पन्न वर्ग का कोई अस्तित्व नहीं।

-श्रीमती जैमीनी नागर गोविन्द नागर
3छ9 विज्ञान नगर, कोटा

विपक्ष

वाद-विवाद प्रतियोगिता-6

जो भविष्य को उज्जवल बनाए वही सुरीति

रीति और कुरीतियों को स्पष्ट रूप से परिभाषित तो नहीं किया जा सकता मगर अनुभव अवश्य किया जा सकता है जिस रिवाज की दुहाई देकर हम अपना भविष्य बोझिल बना लेते हैं मैं तो उसे ही कुरीति कहुंगी और जो भविष्य को सजाए, संवारे, संस्कारित और अनुकरणीय बनाये वही सही रीति-नीति है। कुरीतियों को खत्म करने की शुरुआत सम्पन्न, समृद्ध वर्ग से होना चाहिए इससे सहमत होना कठिन है। मानसिक रूप से सम्पन्न और समृद्ध वही है जो संघर्ष करने और नदी की धारा के विपरित भी जाने का साहस रखता हो। नागर परिवारों में कन्यादान होता है कन्या का क्रय-विक्रय नहीं, बरातियों का स्वागत अमृत वचनों से होना चाहिये । हम दहेज की कुरीतियों को गले लगाने का दुःसाहस क्यों करें? क्या दूसरे समाज की कुरीतियों को आत्मसात करना हमारी मजबूरी है? भगवान श्रीकृष्ण और माता रुक्मणी द्वारा सम्पन्न कराया गया 'कुंवरबाई का मामेरा' श्रीमंतों के परिवार को पूर्ण रूप से खुश नहीं कर पाया तो हम साधारण परिवार की क्या बिसात? मुझे ऐसे सम्पन्न घरानों का भी स्मरण हो आता है जो अपनी सम्पन्नता और प्रतिष्ठा बचाने के लिए लाखों का खर्च कर लेते हैं परन्तु अपनी समृद्धि को बढ़ाना तो दूर बरकरार भी नहीं रख पाते हैं। सामुहिक यज्ञोपवित और सामुहिक विवाह प्रशंसनीय है, अनुकरणीय है परन्तु कुछ लोग प्रशंसा, यश, कीर्ति और वाह-वाही कमाने के लालच में उसके आयोजक बनते है परन्तु स्वयं अपने विवाह आयोजन अलग से ही करना पसंद करते है ऐसे लोगों से क्या उम्मीद रखना। मैं अपनी दादी से सुना करती थी नागर परिवार में ऐसे भी साहसी हुए है जिसने अपनी कन्या के विवाह में एक समृद्ध परिवार की भारी भरकम बारात की व्यवस्था करने से इंकार कर दिया था बारात तो तीन बसों में भरकर आयी परन्तु उनकी ठहरने और खान-पान की व्यवस्था बनाने के लिए एक मेटाडोर उन्हें अलग से भेजनी पड़ी और खर्च का वहन भी स्वयं करना पड़ा। स्पष्टवादिता में कटुता नहीं होती वह परिवार आज भी सुखी वैवाहिक जीवन बिता रहा है। एक और परिवार भी याद आता है जिसने अपनी आर्थिक परिस्थितियों की असलियत को नहीं छुपाया। किसी भी कुरीति का अनुसरण करने से इंकार कर दिया विधि का विधान देखों उनकी दोनों ही पुत्रियों का विवाह सम्पन्न परिवारों में हुआ और दोनों सुखी है। ठीक इसके विपरित मेरी एक सहेली की समृद्ध परिवार में शादी तय हुई। शादी में जो खर्च हुआ लोग वाह-वाह कर उठे उसे देखकर दूल्हे वालों ने भी समकक्ष खड़े होने का स्वांग भरा विवाह सम्पन्न हुए पांच वर्ष हुए परन्तु वह अपनी आर्थिक कठिनाईयों और कर्जों से अभी भी उबर नहीं पायी है। क्या अब उसका बाबूल अपनी भूल सुधार कर सकता है नहीं! कदापि नहीं। बढ़ती हुई बेरोजगारी और महंगाई में आज परिवार को चलाना कठिन हो रहा है वहां सोलह संस्कारों और पर्वों का आयोजन तो होता ही रहेगा परन्तु उसमें सादगी और मितव्ययिता का होना आवश्यक है। हर प्रसंगों में मुंह मीठा करना और करवाना हमारा ध्येय होना चाहिए उसके लिए रिसेप्शन में छप्पन भोग (काउन्टर) की आवश्यकता नहीं होती। इसलिये स्वयं आगे बढ़ना है, समाज को आगे बढ़ाना है तो कुरीतियों को खत्म करने के लिए सम्पन्न परिवार की पहल की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए हमें स्वयं आगे बढ़ना होगा।

-अभिलाषा त्रिवेदी
'नानक निवास'
चोरा चौक, नागर वाड़ा, बांसवाड़ा (राजस्थान)

वाद-विवाद प्रतियोगिता-6

परिस्थितियों के हिसाब से परिवर्तन करना चाहिए

कुरीतियों का सम्बंध अज्ञान व परम्परा से होता है। किसी बात का सही ज्ञान न होने पर उसे परम्परा से जोड़ दिया जाता है और सभी लोग उसका अंधानुकरण करने लगते हैं। जबकि कोई बात किसी समय या परिस्थिति में सही हो लेकिन समय, व्यक्ति या परिस्थिति बदलने पर उसमें नवीनीकरण करना जरूरी होता है। ऐसा न करने पर वह कुरीति का रूप ले लेती है। चूंकि कुरीति का जन्म अज्ञान से हुआ है। अतः उसे दूर करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान बुराईयों को समझ सकता है, तर्क कर सकता है। लेकिन उन्हें दूर करने के लिए समाज में उन्हें सही तरीके से सबके सामने रखा जाना चाहिए। साहस के साथ सही बात को सिद्ध करना व उसके लिए लगातार प्रयत्न करते रहने पर कुरीतियों को दूर करने की कोशिश की जा सकती है। अतः कुरीतियों को दूर करने के लिए ज्ञान से सम्पन्न और समृद्ध होने की आवश्यकता है न कि आर्थिक रूप से सम्पन्न और समृद्ध होने की। अतः समाज का कोई भी व्यक्ति जो ज्ञान एवं विवेक रूपी धन से सम्पन्न है एवं किसी भी कुरीति को दूर करने की इच्छा रखता है, शुरुआत कर सकता है।

-अल्पना दवे
259, सी राजेन्द्र नगर इन्दौर
फोन 0731-2321470

वाद-विवाद प्रतियोगिता 7 का विषय है-
प्रत्येक परिवार नागर तीर्थों (वडनगर-अंबाजी-जुनागढ़) आदि की यात्रा करें?

व्यंजन विधि प्रतियोगिता-4

वाह..... व्यंजन प्रतियोगिता में प्रतियोगियों की संख्या बढती ही जा रही है। महिलाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिका में भई व्यंजन की बात न हो तो बाकि सब तो फीका ही फीका रहेगा न। व्यंजन प्रतियोगिता 3(प्रकाशन-दिसम्बर 09) की विजेता रहीं है श्रीमती विभुति आ.जोशी 528, उषा नगर, एक्स. इन्दौर फोन 2485153 इन्हें 300रु. का पुरस्कार भेजा जा रहा है। आजकल सर्वश्रेष्ठ विधियों के बारे में पाठको से ही राय प्राप्त की जाती है। आगामी प्रतियोगिता का विषय है गोभी (फूल-पत्ता) तो पेन और कागज लेकर तैयार हो जाइए और 25 जनवरी से पहले अपनी सर्वश्रेष्ठ विधि लिख भेजिए। आज नहीं तो कल आप भी होंगे प्रथम पुरस्कार के विजेता

मटर पेटीस-

सामग्री- 500 ग्राम आलू, 150 ग्राम मटर, 1 नींबू, 2 टेबल स्पून अरारोट, 1 टेबल स्पून शक्कर बुरा, 1/4, कप ब्रेड का चुरा, छोटा टुकड़ा अदरक, 1 टेबल स्पून पीसी हरी मिर्च, 2 टेबल स्पून तेल, 1/2 टी स्पून राई, 1 टी स्पून तिल्ली, 1/2 कप हरा धनिया, 1/4 कप खोपरा बुरा, 1/4 कप सींगदाना का चुरा, 2 टेबल स्पून शक्कर, 1 टेबल स्पून गरम मसाला, मोटा आटा आवश्यकतानुसार तलने के लिये तेल व नमक।

विधि- आलू को उबाल कर मेश कर उसमें नमक, आधे नींबू का रस, अरारोट, शक्कर का बुरा एवं ब्रेड का चुरा डालकर मिला लेवे।

मटर, हरी मिर्च, अदरक को क्रश करें, तेल में राई का बघार करके उसमें तिल्ली व क्रश मटर मसाला डालकर हरा धनिया खोपरा, नमक, शक्कर, सिंगदाने का चुरा मिला दें। थोड़ा पक जाये फिर 1/2 नींबू का रस और गरम मसाला डाल के ठंडा होने दें।

आलू की छोटी सी पूरी जैसा बनाकर उसमें मटर का मसाला भर कर लड्डू का आकार देवे। अब गरम तेल में धीमी आंच पर ब्राउन होने तक तले। गरम-गरम सांस या हरी चटनी के साथ सर्व करें।

-विभूति जोशी
528, उषा नगर एक्स. इन्दौर

मटर की गुजिया-

आवश्यक सामग्री- ताजे मटर के दाने 250 ग्राम, मावा 250 ग्राम, शक्कर 500 ग्राम, घी 500 ग्राम, मैदा 500 ग्राम, इलायची पावडर, काजू-बदाम 100 ग्राम।

विधि-मटर के दानों को पीस ले। दो चम्मच घी गर्म करके उसमें पीसे हुए मटर के दाने धीमी आंच पर 15 मिनिट तक सेंके। उसमें मावा डालकर 5 मिनट तक सेंके। फिर शक्कर डाल कर गाढ़ा होने तक पकाएं। मिश्रण के गाढ़ा होने पर आंच से उतार कर उसमें इलायची पावडर व काजू-बदाम डाले। मिश्रण को ठण्डा होने दें।

अब मैदे में दो चम्मच घी का मोयन डाल कर पानी से गुंथ ले। मैदे की छोटी-छोटी पूरियां बैल ले। तैयार किए गए मिश्रण की छोटी गोलियां बनाकर पूरियों में भरें। उसे गुंजे के आकार का काट ले। घी में हल्का गुलाबी होने तक तले। गर्म-गर्म सर्व करें। ये गुंजिया स्वादिष्ट होने के साथ ही प्रोटीन व कार्बोहाइट्रेड से भरपूर है।

-अल्पना दवे
259-सी, राजेन्द्र नगर, इन्दौर
फोन 0731-2321470

मटर फ्रैकी-

सामग्री- 250 ग्राम मटर, 2 आलू, हल्दी, नमक, हींग, धनिया, गरम मसाला, अमचूर, अदरक, हरी मिर्च के टुकड़े, सौंफ स्वादानुसार, 4 चम्मच तेल, उड़द, चना या मूंग के पापड़ (नर्म जो मोड़ने से नहीं टूटे)

विधि- सर्वप्रथम मटर के दानों को मिक्सर में बारीक पीसे लें, आलू को कच्चा कीस लें। अब 4 चम्मच तेल को कड़ाही में गर्म करके उसमें हींग, सौंफ का छोंक लगाकर अदरक हरी मिर्च तथा मटर का पेस्ट एवं आलू डाल कर हिलाये। इसे ढककर पकने दें, पक जाने पर नमक धनिया, लाल मिर्च, अमचूर एवं गरम मसाला डालकर हिलाएं तथा हल्का मसल लें। अब आपका मिश्रण तैयार है।

पापड़ भी गोलाई निकालकर इसे आयताकार कर लें। इसके बराबरी से 2 टुकड़े कर के प्रत्येक में मटर का उपरोक्त भरावन भरें और इसे मोड़कर पानी से बन्द कर दें ताकी यह खुले नहीं। अब इसे गरम तेल में डालकर फ्राय करें। हरी चटनी एवं टमाटर सांस के साथ गरम-गरम परोसे।

नोट- पापड़ में भरावन के लिये मनपसन्द आकार दिये जा सकते हैं।

-अपर्णा दिव्यकान्त पंडित
80/2, ग्रेसिस स्टाफ कालोनी बिरलाग्राम, नागदा (म.प्र.)
फोन 07366-244354

मटर कतली-

सामग्री- 1 किलो - मटर के दाने
750 ग्राम- शक्कर
250 ग्राम- मावा
250 ग्राम - घी

मटर के दाने को मिक्सी में बारी पीस कर धीमी आंच पर घी छुटने तक सेंक लेवें। अब इसको सिके हुए मावे के साथ डेड तार की शक्कर की चासनी में अच्छी तरह मिला लेवे। एक घी लगी थाली में इसको फैला देवें। बादाम और पिस्ता कतरन से साजए तथा ठंडा होने पर मन चाहे आकार में काट कर सर्व करें।

-वंदना जोशी
528, उषा नगर एक्स. इन्दौर

देख के हंस रही है

एक बंदा- यार, एक लड़की मुझे हंस के देख रही है।

दूसरा-बंदा- अबे ध्यान से देख, हंस के देख रही है या देख के हंस रही है।

मटर चूडा नमकीन-

साम्रगी, काजू, किशमिश, हरी मिर्च, हरा धनिया, पोहा, मटर, दूध, शक्कर, घी, आलू, बैंगन, जीरा नमक नीबूं

विधि- आलू बैंगन का छिलका निकालकर छोटे-छोटे टुकडे काट लें अच्छी तरह से धो लें। पोहे को भी पानी मिलाकर कढाई में थोडा घी डालकर जीरा,आलू बैंगन, मटर को पका लें, हलका भुनने के बाद उसमें थोडा सा नमक,शक्कर,नींबू का रस और फिर गले हुए पोहे डालकर थोडा दूध का छींटा दें और ऊपर से कटी हरी मिर्च हरा धनिया, काजू-किशमिश डाल दें फिर सर्व करें।

-शक्ति नागर
खंडवा (म.प्र.)

मटर की बेडमी-

साम्रगी- मटर, हरा धनिया, जीरा, नमक, हल्दी, हींग, बेसन, आटा, तेल, हरी मिर्च, अदरक।

विधि- मटर को अच्छी तरह से पीस लें। आटे में थोडा सा बेसन, हरी मिर्च,हींग,अदरक,हरा धनिया,जीरा-नमक ये पेस्ट बनाकर आटे में अच्छी तरह मिला लें और पूरी के आकार में बेल कर तल लें तथा आलू टमाटर की सब्जी के साथ परोसें।

-गायत्री मेहता
इन्दौर फोन 4060554

मटर की मीठी पुरणपोली-

साम्रगी- मटर, घी, आटा, शक्कर, इलायची पीसी हुई काजू-बादाम।

विधि- मटर को कच्ची पीस लें। कढाई में घी डालकर अच्छा भुन लें फिर उसमें पिसी इलायची पाउडर, बादाम, काजू पाउडर डाल दें और जैसे पुरण पोली बनाते हैं वैसे बनाए आटे की रोटी बेलकर उसमें ये मटर का भरावन रखकर हलका बेलकर तवे पर घी लगाकर सेक लें। कढी के साथ खाएं।

रेखा मिश्रा
भोपाल (मो.) 9425376472

समस्या नहीं... समाधान बनो

यदि आप अपना एवं दूसरों का जीवन सुखमय बनाना चाहते हैं तो हमेशा समाधान बनने का प्रयास करो। वैसे तो बात छोटी-छोटी है किन्तु है महत्वपूर्ण। हम किसी कार्यालय में जाते हैं तथा बाबू किसी कार्य में व्यस्त हैं या मशगुल है तो उसे सदाशयता पूर्वक अपना काम कर लेने दे, यदि ऐसी स्थिति में हम थोडी देर रुकर जाएंगे तो कोई पहाड नहीं टूट पड़ेगा निश्चित रूप से हम उसके काम में सहयोग करेंगे तो वह हमारे काम में सहयोग करेगा। अतः उसके लिए समस्या न बनकर हम समाधान बन गए हैं। इसी प्रकार सड़क पर चलते समय भी हम जल्दबाजी या आगे निकलने की होड़-जोड़ में स्वतः ही यातायात को जाम करने की समस्या बन जाते हैं। यदि इसी जगह आप नियमानुसार चलकर यदि यातायात को सुचारू करने में सहयोग करेंगें तो समाधान बन जाएंगें। बाहर की तरह ही समस्या-समाधान का सूत्र घर और परिवार पर भी लागू होता है। आप यदि अपने माता-पिता की भावनाओं की कद्र करते हैं उनकी इच्छाओं के साथ तालमेल बैठाकर चलते हैं तो आप समाधान हैं। यदि अपने कैरियर का प्रश्न हो या विवाह का। अपने परिवार के साथ राय-मशविरे एवं सहमति से कार्य करें। कई बार परिवार की इच्छा के विपरीत हम काम करना, निर्णयों लेना शुरू कर देतें हैं जो अंततोगत्वा परिवार के अपयश या परेशानी का कारण बन जाता है। और अंततः ऐसे निणर्यों से हमें भी सुख नहीं मिलता। हम समस्या बनकर स्वयं भी परेशानी में पड़ जाते हैं लेकिन ऐसी अवस्था में लिए गए निर्णयों के लिए हम स्वयं दोषी होते हैं अतः अपना दुखड़ा भी किसी के सामने नहीं रो सकते। भगवान ने यह दुर्लभ मनुष्य जीवन हमें शान से जीने और मोक्ष प्राप्ति के लिए दिया है। उसी व्यक्ति का जीवन धन्य हो पाता हैं, जो स्वयं तो समाधान बनता ही है। अन्य लोगों की समस्याओं का समाधान भी करता हुआ अपने लिए जीए तो क्या जीए, तू जी ए दिल जमाने के लिए के बोधवाक्य को सार्थक करता है। अतः जीवन में स्वयं सुखी होना है तथा अपने परिवार समाज-देश को भी सुखी बनाना है तो समाधान बनो....समस्या नहीं।

-पवन शर्मा

राष्ट्रीय बचत योजनाएं

आज की बचत
कल की मुस्कान

योजनाएं-
1. वरिष्ठ नागरिक बचत खाता 9 प्रतिशत ब्याज
2. मासिक आय योजना 8 प्रतिशत ब्याज 5 प्रतिशत बोनस
3. किसान विकास पत्र
4. 6 वर्षीय राष्ट्रीय पत्र 6 एन.एस.सी. आयकर में छूट
5. 1,2,3,5 वर्षीय सावधि खाता आकर्षक ब्याज तथा एजेन्ट द्वारा उपहार।

कृष्णकान्त शुक्ल

सी-59, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड, उज्जैन मो. 94259-15292, फोन 2511885

रिश्तों की बहार, अब कैसा इन्तजार

फरवरी 2010 के अंक में

'निःशुल्क परिणय परिचय पत्रिका'

का प्रकाशन

जी हाँ! फरवरी 2010 का अंक आपके लिए योग्य रिश्तों की सौगात लेकर आएगा।
विवाह योग्य युवक-युवती का विवरण एवं पासपोर्ट साईज रंगीन फोटो 20 जनवरी 2009 तक
हमारे पास अवश्य भेज देवें। (प्रकाशन निःशुल्क) निम्नलिखित प्रोफार्मा में

फोटो यहां लगावें

नाम .....

पिताजी का नाम .....

जन्म दिनांक..... स्थान.....

कार्यरत .....

ऊंचाई ..... वजन..... सम्पर्क/पता .....

.....फोन..... मोबाईल.....

नागर समाज की आवाज जय हाटकेश वाणी आप अभी तक सदस्य बनें या नहीं? आकर्षक रुचिकर उपयोगी तीनों विशेषताओं से परिपूर्ण

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं .....

पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/- रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com

jayhotkeshvani@gmail.com

बागवान

भौतिक जीवन जीने वाले और त्यागमय जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति में क्या अन्तर है?

एक सईस और एक बागवान थे। सईस को बिल्कुल भी मानसिक शान्ति नहीं थी। यदि घोड़े को छोड़ा गया तो कहीं खो तो नहीं जाएगा? कहीं कोई घोड़े को परेशान तो नहीं करेगा? उसको दिया हुआ दाना घोड़े ने ठीक से खाया नहीं? ऐसे विचार उसके मन में आया करते थे। इस तरह वह सदैव परेशान रहता था। बागवान को सदैव शान्ति बनी रहती थी। यदि वह प्रवेश द्वार पर बैठता तो सुनिश्चित कर सकता था कि कोई भी अंदर न आ सके। चौकीदारी करते समय प्रति पल बगीचे की छटा का आनन्द उठाता। उसका कार्य कितना प्यारा था। पौधों की किंचित मात्र वृद्धि भी उसे और अधिक आल्हादित कर देती थी। त्यागमय जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति बागवान की तरह होता है, सदैव शांत, विनम्र और अपने आप से संतुष्ट रहता है। जो व्यक्ति भौतिक संसार में लिप्त रहता है वह सईस की तरह होता है। मानसिक शान्ति उसके लिए दिवास्वप्न के समान होती है।

-गायत्री मेहता इन्दौर
फोन 4060554

लीडरी का नुस्खा

सामग्री- खुशामद का शर्बत 1 तोला, घूंस का निर्मल जल 8 तोला, घोरवे की सुद्र दास 2 तोला, खुदगर्जी के ताजे बीज 1 तोला, बेईमानी का पोष्टिक अर्क 4 माशा, द्वेष के सुन्दर फूल 5, बड़बड़ाहट की बूटी 4 तोला, बगावत का नशा 1 छटाक।

विधि- उपरोक्त सभी बहुमूल्य औषधियों को बेदर्दी की तुला में तोल कर मिथ्या के खरल में डालकर बेखबरी की मूसल से तब तक रगड़ते रहें जब तक पोल ढकी रहे। फिर पार्टी की छलनी में छान कर फूट की पतीली में डाल कर लालच के चूल्हे पर चढ़ा कर अविश्वास की आग जलायें एवं उबाले तत्पश्चात बेईज्जती के प्याले में डाल कर पीयें। यदि आप इसी तरह सेवन करते रहे और जनता में जागृति न आये तो देशप्रेम जातिप्रेम और समाज सेवा आदि सभी रोगों का निवारण हो जायेगा और आप एक ख्याति प्राप्त नेता बन जायेंगे।

-अशोक पंडित
मो. 9926874892

जिन्दगी

जिन्दगी एक यात्रा है- हंसते हुए पूरी करो।
जिन्दगी एक चुनौती है - उसका सामना करो।
जिन्दगी एक खुशी है - उसे खर्च करो।
जिन्दगी एक संघर्ष है - स्वीकार करो।
जिन्दगी एक जादुई महल है उसे फतह करो।
जिन्दगी एक दर्द है- उस पर काबू करो।
जिन्दगी एक वरदान है उसे आलिंगन करो।
जिन्दगी एक सपना है उसे अनुभव करो।
जिन्दगी एक गीत है - गाओं जी भर कर।
जिन्दगी एक पहेली है - उसे हल करो।
जिन्दगी एक अवसर है - पूरा लाभ लो।
जिन्दगी तो जिन्दगी है - तो चिन्ता किस बात की।

नागरों की शादी में गरबा अनिवार्य

नागर ब्राह्मणों का घर तो वैसे गुजरात है लेकिन यह लोग महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब, बंगाल, कलकत्ता आदि प्रांतो में फैल गये हैं। यह समाज राजस्थान में काफी तादाद में है जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर, निवाई, दौसा, पाली, बीकानेर आदि शहरों में बस गये हैं समाज आध्यात्मिक विचारों से ओत-प्रोत है। प्रगति शील समाज है। शिक्षा एवं सरकारी नौकरियों में उच्च पदों पर कार्यरत है।

समाज में लड़कियों का विवाह वरपक्ष की ओर से बिना किसी दहेज के हो जाता है दहेज के नाम पर कुछ भी नहीं लिया जाता जो कंकू कन्या विवाह कहा जाता है। नागर समाज में विवाह में एक रस्म होती है जिसे मौसाला कहते हैं इसमें वधु का मामाविवाह से पहले वधु के लिए चुड़ियां और पानेतर सिल्क की विवाह में पहनने की साड़ी जो आमतौर पर सफेल लाल बार्डर वाली होती है। साथ में उपहारों से भरी टोकरी रंगबिरंगी भेंट के रूप में दी जाती है।

नागर ब्राह्मणों के विवाह में तड़कभड़क भी खूब होती है। विवाह के दौरान गुजरात का प्रसिद्ध गरबा नृत्य भी किया जाता है। नागर ब्राह्मणों में मजमूदार, त्रिवेदी, द्विवेदी,पण्डया, दवेदिया, मेहता, राणा, दवे, याग्निक दीवान मांकड़, मकोड़ी, हाथी, वैष्णव आदि प्रमुख जातियां है।

वर-वधु की विवाह की स्वीकृति हेतु चांदलों रस्म की जाती है। इस में पण्डित वर-वधू के माथे पर तिलक लगाता है। और सभी नाते रिश्तेदार एकत्रित होते हैं और आशीर्वाद देते हैं वर-वधू का आपस में माल्यार्पण होता है दोनों परिवारों में उपहारों का आदान प्रदान होता है। विवाह सम्बंधी रस्म शुरु करने के पूर्व वधू का भाई गणेश स्थापना करता है। इस अवसर पर वर-वधू के चाचा, भूआ अपने-अपने घरों में गणेश पूजा करते हैं। नागर ब्राह्मणों के विवाह में ढोल की थाप पर महिलाएं गरबा नृत्य भी खूब करती है और डांडियां नृत्य में पुरुष भी शामिल हो जाते हैं। गरबा शाम को शुरु होता है और रात तक चलता है। हल्दी लगाने के लिए इस समाज में पीढ़ी और मण्डप तैयार करने के लिए माण्डा रस्म भी होती है। मांडवा मुहूर्त का इन के यहां काफी महत्व होता है। इस रस्म में वर-वधू के माता-पिता पृथ्वी मां से आशीर्वाद लेते हैं। और मंडप लगाने की अनुमति मांगते हैं। यह कार्य पण्डित करता है। जहां मंडप लगाना होता है। वहां एक खम्बा गाड़ा जाता है। इसके तत्काल बाद नौ ग्रहशांति हेतु ग्रहशांति की पूजा होती है। हवन भी होता है मामेरा पहरावनी भी यही होती है वर द्वारा घोड़े पर चढ़कर आने की रस्म को वर घोड़ी कहते है। फेरे की रस्म अन्य जातियों की तरह होती है। बारात विदाई के समय वर-वधू हाथों में कुमकुम लगाते है और वधू के घर पर छाप लगाते हैं।

पलगाचार की रस्म पहले इस समाज में नहीं की जाती थी क्योंकि यह कार्यक्रम अशुभ माना जाता था अब समय के अनुसार रीति रिवाज बदलते जा रहे है। आधुनिक समाज में पुराने रीति रिवाज गौण होते जा रहे हैं।

-रमेश चन्द्र नागर
3छ9 विज्ञान नगर कोटा

आजादी के बाद तक 11 गांवों में उनकी जागीर रही

(यह विवरण प्रसिद्ध इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा के उदयपुर राज्य का इतिहास पृष्ठ 336,574, 591 एवं 656 तथा वीर विनोद पृष्ठ 309, 352, 402 एवं 408 के आधार पर तैयार किया गया। जिनका मूल आधार कीर्ति स्तम्भ की प्रशस्ति श्लोक 188 से 193 चित्तौड़ के समिद्वेश्वर मंदिर की प्रशस्ति के अन्तिम श्लोक, घोसुण्डी की बावड़ी की प्रशस्ति श्लोक 25 एवं एकलिंगजी के मंदिर के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति श्लोक 39-40-67 तथा 91-101 रहा हैं। इनका उल्लेख डॉ. गोपीनाथ शर्मा के 'राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत' नामक पुस्तक के पृष्ठ 133,147,154-156, 159,163-64 में भी हैं। इनके अलावा दशोरा जाति को मिले जागीर के गांव के ताम्रपत्र आदि भी इसके आधार हैं।)

मेवाड़ में आगमन- जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि मन्दसौर में हुए दशोरा (ब्राह्मण)जाति के कत्लेआम के बाद उनके सेनापति हालूजी हाड़ा ने जिन 15 दशोरा परिवारों (30व्यक्तियों) की रक्षा करके चित्तौड़ के महाराणा रावल रतनसिंह की शरण में भेजा था वे यहां आकर उनकी शरण मिल जाने से चित्तौड़ एवं उसके आसपास के गांवों में बस गये। ये परिवार यहीं से स्थानान्तरित होकर मेवाड़ के अन्य स्थानों में सुविधानुसार बसते गये। कुछ परिवार बाद में मध्य प्रदेश में देंतली एवं नावली गांवों से तथा कुछ गुजरात से आकर बसे। इस प्रकार मेवाड़ में वर्तमान में रह रहे समस्त दशोरा परिवारों का आगमन भिन्न-भिन्न समय में हुआ।

महाराणा रावल रतनसिंह का मेवाड़ में शासनकाल विक्रम संवत् 1358 (सन् 1301 ई.) से विक्रम संवत् 1360 (सन् 1303) तक दो ही वर्ष का था। रावल रतनसिंह के गद्दी पर बैठते ही दिल्ली का सुलतान अलाउद्दीन खिलजी चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करने के लिए दिल्ली से विक्रम संवत् 1359 माघ सुधी 9 तारी 28 जनवरी सन् 1303 ई. को रवाना हुआ तथा विक्रम संवत् 1360 भाद्रपद सुदी 14 तारीख 26 अगस्त सन् 1303 ई. को चित्तौड़ का किला जीत लिया। यह अलाउद्दीन विक्रम संवत् 1353 (सन् 1296 ई.) में गद्दी पर बैठा था। इस युद्ध में रावल रतनसिंह मारा गया था। इस प्रकार ये दशोरा परिवार संभवतः चित्तौड़ में विक्रम संवत् 1358 (सन् 1301 ई.) के आसपास आये हों।

जागीरे एवं सम्मान- चित्तौड़ में जो दशोरा परिवार मन्दसौर से आये थे उनमें कई उद्भट्ट विद्वान, कवि, न्यायनिपुण, वेद-विद्या एवं दर्शन शास्त्र के ज्ञाता तथा वैद्यक में निपुण थे। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर मेवाड़ के महाराजाओं ने इन्हें समय-समय पर जागीरें, द्रव्य, वस्त्र, भूमि आदि देकर इन्हें सम्मानित किया। विद्वत्ता की यह परम्परा कई पीढ़ियों तक चलती रही जो इस जाति के लिए गौरव की बात है। मेवाड़ में जो दशोरा परिवार आये थे उनमें विद्वान पंडित झोटिंग भट्ट तथा उनके पौत्र महेश भट्ट का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। जिनका उल्लेख चित्तौड़ किले पर महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित कीर्ति स्तम्भ (वर्तमान में विजय स्तम्भ) की प्रशस्ति तथा एकलिंगजी के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति में किया गया है। इनकी विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर आसपास के राज्यों में भी इन्हें अपने यहां सम्मानपूर्वक बुलाकर इन्हें जागीरें एवं अन्य सम्मान प्रदान किया। इस प्रकार मध्यप्रदेश और मेवाड़ के हिन्दू राज्यों में इनका प्रभाव फैला।

मेवाड़ में कुल 11 गांव इन्हें जागीर में मिले जो भारत आजाद होने के बाद भी सन् 1958ई. तक इनके वंशजों के अधीन रहे जिससे ये अपना निर्वाह करते रहे। 1 जुलाई 1958ई. को जागीर पुर्नग्रहण एक्ट के अधीन इन्हें जब्त कर लिया गया तथा मुआवजे की राशि इन्हें दे दी गई। इन जागीरों का पुर्नग्रहण दिनांक 23-8-54 से ही माना गया। दशोरा जाति के जिन विद्वानों ने विशेष ख्याति प्राप्त की उनका विवरण निम्नानुसार हैः-

बसन्तराय-सोमनाथ एवं नरहरि- रावल रतनसिंह की मृत्यु के बाद हमीर एवं क्षेत्रसिंह गद्दी पर बैठे जिनका शासनकाल 79 वर्ष तक रहा। इसके बाद विक्रम संवत् 1439 (सन् 1382ई.) में महाराणा लाखा गद्दी पर बैठे जिनका शासन काल विक्रम संवत् 1478 (सन् 1421ई.) तक रहा। इन्हीं के शासन काल में दशपुर (दशोरा) जाति के 'झोटिंग भट्ट' नामक प्रसिद्ध विद्वान हुए थे जिन्हें 'झोटिंग केशव' भी कहते थे। ये भृगु वंश (भार्गव गोत्र) के सार्वण भट्ट परिवार में उत्पन्न हुए थे। ये बसन्तराय-सोमनाथ के पौत्र एवं नरहरि के पुत्र थे। बसन्तराय-सोमनाथ बड़े विद्वान थे तथा नरहरि न्यायनिपुण होने के अतिरिक्त वेद विद्या में भी निपुण थे इसलिए इन्हें पृथ्वी का 'ब्रह्मा' कहा जाता था। बसन्तराय-सोमनाथ के पिता संभवतः रावल रतनसिंह के समय में विक्रम संवत् 1358 में मेवाड़ में आये हों। (क्रमशः)

प्रस्तुति-शीला जगदीश दशोरा

क्या हांसिल करोंगे तुम

टीचर ने बच्चे से पूछा- बताओ, बड़े होकर क्या करोगे?

बच्चा- शादी करुंगा।

टीचर- वो नहीं, मैं पूछ रहा हूं बड़े होकर क्या बनोगे?

बच्चा- दूल्हा।

टीचर (झल्लाकर)- मेरा मतलब है, बड़े होकर क्या हासिल करोगे?

बच्चा- दुल्हन।

चांचौड़ा नागर संतति वंशवटवृक्ष के 150 वर्ष - एक समीक्षा

वटवृक्ष सभी वृक्षों का वट के रूप में विशाल कायावाला वृक्ष होता है, जिसकी जड़े इतनी गहरी होती है कि उसे कोई आंधी हिला नहीं सकती है। उसकी अनेक शाखाएं, उपशाखाएं डालियां होती है जिस पर लगी पत्तियां सर्वदा पल्लवित होकर हरीतिमां बिखेरती रहती है। वटवृक्ष लम्बी आयु वाला वृक्ष होता है जो किसी प्राचीन संस्कृति एवं संतति का प्रतीक बन कर वर्तमान एवं भावी संस्कृति को अपनाने का सबक देता है। ऐसा ही एक वंश वटवृक्ष मध्यप्रदेश के गुना जिले के ग्राम चांचौड़ा में देखने को मिला है। यह वंश वटवृक्ष नागर ब्राह्मण परिवार से संबधित है जिसका इतिहास डेढ़ सौ वर्ष पुराना है, जिसकी वंश जड़ो को इस परिवार के ऐसे महामानवों, वंशजों द्वारा सींचा एवं पल्लवित किया गया, जिसकी 700 से अधिक संतति शाखाएं आज भी फल फूल रही है।

चांचौड़ा के नागर ब्राह्मण वंश वटवृक्ष के इतिहास को मूर्तरूप देने हेतु इसी वंश के स्व. सपूत प्रोफेसर डॉ. महेन्द्र बसन्तीलालजी नागर को कुछ विशिष्ट नागरजनों से उत्प्रेरणा प्राप्त हुई और उसे साकार करने हेतु परिवार के वरिष्ठ अग्रगण्य सदस्यों से आशीर्वाद प्राप्त कर इस वंशवृक्ष के अर्वाचीन स्वरूप से वर्तमान तक की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत कर, नागर ब्राह्मण समाज एवं अन्य समाज के समक्ष एक ऐसा अद्‌भूत उदाहरण प्रस्तुत किया जो अनुकरणीय है।

डॉ. नागर ने चांचौड़ा वंश वटवृक्ष के इतिहास में बताया कि सन् 1859 में ग्राम लसुड़िया से पं. काशीराम मेहता नागर अपने चार पुत्रों पं. शालिगरामजी, पं. जगन्नाथजी, पं. रामलालजी एवं पं. मुन्नालालजी व पुत्री सरस्वती देवी के साथ चांचौड़ा आये और यहीं गोपालकृष्ण मंदिर के पूजारी बन गये। वस्तुतः इन्ही चार पुत्रों व पुत्री से ही चांचौड़ा के वंश वटवृक्ष की उत्पत्ति हुई जिसके आज 700 से भी अधिक सदस्य हैं।

चांचौड़ा नागर वंश वटवृक्ष की आज 700 शाखा टहनियां है। इस वंश वटवृक्ष की जड़ें आज देश-विदेश में फैली हुई है।

डॉ. नागर ने चांचौड़ा नागर ब्राह्मण वंश का यह वंश वटवृक्ष संतति के रूप में पितृपुरुष स्व. बसंतीलालजी नागर की 15वीं पुण्यतिथि पर दिनांक 9.9.2009 को समस्त चांचौड़ा नागर ब्राह्मण परिवार की उपस्थिति में उनके चरणों में सादर समर्पित किया जो वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए एक दिव्य उदाहरण सिद्ध होगा।

चांचौड़ा नागर ब्राह्मण परिवार के वंशवृक्ष के विवरण से स्पष्ट है कि यह गुजराती नागर ब्राह्मण विशनगरा जाति के है। इनकी अवटंक मेहता, गौत्र पाराशर, वेद अथर्व वेद, कुल देवत हाटकेश्वर, कुलदेवी माता अन्नपूर्णा लसूड़िया ब्राह्मण, भैरव खांखरा भेरु किसौनी एवं सती रंथभंवर में है।

चांचौड़ा नागर ब्राह्मण परिवार वंशवट के 700 सदस्यों में 99 प्रतिशत शिक्षित है। वंश के सदस्यों को प्रोफेसर, इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, तहसीलदार, स्वतंत्रता सैनानी, शिक्षक, बैंक मैनेजर, व्यापारी के रूप में देखे जा सकते हैं।

डॉ. महेन्द्र नागर ने चांचौड़ा नागर वंश वटवृक्ष को संतति नाम देकर यह सिद्ध कर दिया है कि किसी परिवार के लिए इस प्रकार की वंशावली का कितना महत्व है। ऐसे वंश वटवृक्ष से परिवार द्वारा अपने पूर्वजों की आत्म शांति के लिए जहां समय-समय पर स्मरण करने का अवसर मिलता है वहीं अपनी भारतीय संस्कृति एवं परम्परानुसार उन दिवंगतों की आत्मा को तर्पण करने तथा उनके आदर्शों पर चलने का अवसर भी मिलता है, जिनके तर्पण से भावी पीढ़ी को निरोग रहने, ऊर्जावान बनने एवं सुसंस्कृतिवान बनने का अवसर प्राप्त होता है।

चांचौड़ा नागर वंश वटवृक्ष की शाखाओं, जड़ों को आज भी हरा भरा रखने वालों में इस परिवार की श्रीमती प्रभादेवी नागर, श्रीमती शकुन्तलादेवी नागर, श्री प्रेमनारायण नागर, श्रीमती पुष्पादेवी नागर, डॉ. विष्णुदत्त नागर, डॉ. वल्लभदास मेहता, श्रीमती सुमित्रादेवी मेहता, श्रीमती गुलाब, श्री मोहिनीकांत व्यास, श्रीमती चन्द्रकला व्यास, श्री राधारमण नागर, श्रीमती शकुन्तला देवी नागर, श्री गोविन्द नारायण नागर, श्रीमती शांतिदेवी नागर, श्री रामकृष्ण नागर एवं श्रीमती गीतादेवी नागर का योगदान भुलाया नहीं जा सकेगा। साथ ही वर्तमान नागर परिवार के डॉ. महेन्द्र नागर, सोहन नागर, डॉ. श्रीमती इंदु नागर, श्री वाल्मीकि नागर, दीपक नागर, कृष्णगोपाल व्यास, भरत मेहता, पवन मेहता, नरेन्द्र त्रिवेदी को भी स्मरण किया जायेगा, जिन्होंने अपनी शक्ति, समय एवं धन से नागर संतति को पुस्तक के रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। मैं लेखक डॉ. महेन्द्र नागर के इस प्रयास के लिए बधाई देता हूं।

प्रस्तुति- डॉ. रामरतन शर्मा
सचिव
श्री नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास, हरसिद्धि पाल, उज्जैन
फोन 0734-2516603, मो. 98267-23870

तेरी ढूंढते हैं

दो आदमी अपनी खोई हुई पत्नियों को ढूंढ रहे थे।

पहला- तेरी बीवी कैसी दिखती है?

दूसरा- हाइट 5'5'', फिगर 36-24-36, गोरी, आंखें नीली। और तेरी?

पहला- मेरी छोड़ चल तेरी ढूंढते हैं।

सम्पूर्ण स्वास्थ्य का रहस्य

नागर समाज के गौरवगंध, आयुर्वेद वाचस्पति पं. कृष्णवल्लभजी पौराणिक ने मुझ अल्पज्ञ भानजे को एक बार स्वस्थ की परिभाषा बताते हुए कहा था- 'समदोषः समाग्निश्च, समधातु मलक्रियाः।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमना, स्वस्थ इत्यभिधीयते। मुझे इस श्लोक में स्वस्थ आत्मा, स्वस्थ इन्द्रिय और स्वस्थ मन में सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी हाथ लग गई। वस्तुतः ये तीनों ही हमारे विचारों, भावनाओं, शारीरिक स्थिति, तंत्र व क्रियाओं को निर्धारित करती है सभी बीमारियां चाहे वे मानसिक या शारीरिक हो सिर्फ एक चीज के कारण होती है, वह है 'तनाव'। सारा तनाव एक नकारात्मक विचार से शुरु होता है, और उसे एक छोटे से सकारात्मक विचार से बदला जा सकता है, वह भी बहुत ही आसानी से।

सकारात्मक विचार के लिए हमें प्रेमपूर्ण और कृतज्ञ होना पड़ेगा। फिर देखिए हमारे हृदय में किस प्रकार आनन्द, उत्साह और स्वस्थ भावनाएं हिलोरे भरना शुरु कर देती है। व्याधियां ऐसे हृदय वाले व्यक्ति में नहीं टिक सकती है।

बुढ़ापा सीमाबद्ध चिन्तन है, इसलिए इससे संबंधित विचारों को अपनी चेतना से निकाल बाहर करना होगा। स्मरणार्थ निवेदन है, कि जब तक कि हम बुढ़ापे का आह्वान करके उसे अपनी तरफ न बुलाना चाहें, वह आने में सकुचाएगा। वृद्ध होना शालीनता की सीमा है। बुढ़ापा आना नैराश्य की सीमा में है। दोनों में अवान्तर भेद है। एक स्वस्थ है तो दूसरा रुग्ण।

मात्र विचारों के माध्यम से हम आदर्श सेहत, आदर्श शरीर आदर्श वजन और चिर यौवन पा सकते हैं।

हम सभी जानते हैं मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। बीमारी का रोना रोने के बजाय स्वस्थता के गीत गायें। मन में स्वस्थ होने के सशक्त विचार को स्थान देवें। 'आरोग्य भास्करक्रदा इच्छेत' आरोग्य के लिए भगवान सूर्यनारायण से कामना करें। उत्तमविचार और सद्भावनाएं अपनी असीम ऊर्जा से हमारी आधिव्याधि को उसी प्रकार दूर भगा देगी जिस प्रकार घने अंधकार को एक प्रकाश की किरण।

जब हमारे विचार खुशनुमा होते हैं, हम प्रसन्नचित, हास्य-विनोद पूर्ण होते हैं। तो हमारी 'बायोकेमेस्ट्री' ही बदल जाती है। नाचने-गाने को मन होता है। आश्चर्य है, इससे असाध्य बीमारियां भी साध्य होते देखी गई है।

अन्तस्थ परमात्मा, मौन, एकान्त, आत्मनिरीक्षण भयमुक्तता, आशावादिता, सात्विक भोजन, व्यायाम अच्छी निद्रा अक्रोध श्रद्धा-विश्वास में अद्भुत क्षमता और चमत्कार है। स्वास्थ्य का रहस्य भी इन्हीं सब में निहित है।

-डॉ. विश्वनाथ श्रोत्रिय
130,सेठी नगर, उज्जैन
फोन 2516157

सर्दी-जुकाम नियंत्रित करने के लिये यौगिक क्रियाएं लाभदायक

1. सुखासन, पद्मासन, अर्धपद्मासन, वज्रासन में बैठकर अपने दोनों हाथों की 4-4 आठों उंगलियों से अपने कपाल में 10 से 20 बार रगड़ना। दाहिने हाथ की 4 उंगलियों से कपाल को 10 से 20 बार रगड़ना। फिर कान में आगे, फिर कान के पीछे 10-20 बार रगड़ना। फिर कनपटी पर 10-20 बार रगड़ना। सुबह और शाम दोनों वक्त करना। सर्दी,जुखाम, माइग्रेन, सिरदर्द में 25-30 वक्त सुबह व शाम को करना चाहिये।

2. शशांक आसनः वज्रासन में बैठकर हीप्स को पीछे एडियों पर लगाकर रखना, दोनों हाथों को लंबे खींचकर जमीन पर लगाने की कोशिश करना, फिर इसी पोजीशन में 20 लंबी गहरी सांस लेना और छोड़ना। शशांक आसन के पहले नाक के पास दोनों ऊंगलियों से रगड़ना इसको कम से कम 25-30 बार करना।

सुबह-शाम गरम पानी में नमक डालकर कुल्ला करना, सर्दी-जुखाम के समय हल्का भोजन, रसावली सब्जी पत्ता गौभी लेना चाहिये। लौकी, पालक मेथी, मूंग की दाल, अंकुरित मूंग, पालक, टमाटर, गाजर, पत्ता गौभी का सूप सुबह शाम लेना चाहिये। मौसम के अनुसार फल लेना चाहिये फल का रस भी ले सकते है। खिचड़ी, दलिया का उपयोग लाभदायक रहता है। रात में सुपाच्य भोजन सोने के 2 घंटे पहले करना चाहिये। सर्दी में गरम पानी की भाप उसमें थोड़ा सा विक्स डालकर लेना चाहिये। खांसी में शहद में अदरक के टुकड़े मिलाकर, छोटे-छोटे 2-2 टुकड़े दिन में 2-3 वक्त खाना चाहिये। रात में 5 तुलसी, तीन काली मिर्च थोड़ा अदरक मिलाकर एक कप पानी को आधा कप कर उसे रात में सोने के समय लेना चाहिये। इसमें थोड़ा गुड मिला सकते हैं।

-ए.के.रावल
योग विशेषज्ञ
25,पत्रकार कालोनी (साकेत), इन्दौर
फोन 2565052

भिखारी

भिखारी आदमी से- भाई साहब जरा दस रुपये देना गर्लफ्रेंड को कॉफी पिलानी है।

आदमी- भिखारी होकर गर्लफ्रेंड बनाते हो?

भिखारी- भिखारी ने गर्लफ्रेंड नहीं, गर्लफ्रेंड ने भिखारी बनाया है।

जो मौत से डरते हैं, वे जीवन से प्यार नहीं कर सकते

1. इंसान जब खुद को ज्योतीस्वरूप आत्मा समझकर दूसरे व्यक्तियों को भी उसी आत्मिक स्वरूप में देखेगा तथा ईश्वर की संतान समझकर कर्म व्यवहार करेगा तभी विश्व बन्धुतत्व की भावना तथा विश्व में शांती का सपना साकार होगा।

2. मृत्यु का ज्ञान तथा जीवन की कामना एक ही चीज है। यह बहुत बार सुनने में आता है कि जीना वही जानता है जो मरना जानता है। यह नहीं सुना जाता कि जीवन सबसे अधिक उसी को प्यारा होता है जो मरना जानता है पर है यह भी ध्रुव सत्य है। लोग समझते है तो जीवन से प्यार करते है वे मौत से डरते है, गलत क्योंकि जो मौत से डरते हैं वे जीवन से प्यार कर ही नहीं सकते क्योंकि जीवन में उन्हें एक क्षण भी शांति नहीं मिल सकती।

3. प्रभू तो अनन्य भाव से सुमिरन वाले भक्त के यथार्थ में गुलाम बन जाते हैं केवल भक्त की पुकार में दर्द होना चाहिए आह होनी चाहिये। प्रभु कहते हैं न पत्थर का मुझे समझो, नरम हूं मोम से बढ़कर। गर्म आहे जो डालोगे पल में पिघल जाऊं मैं। मानव स्वार्थ पूर्ति न होने पर तुम को दोषी (ईश्वर को) ठहराता है। प्रभू को पत्थर दिल तक कह देता है, जबकि कमी स्वयं मनुष्य में है, उसके माथे में है व उसके द्वारा चुने गए मनमाने मार्ग में है।

4. यदि हम अपने जीवन में सुख-समृद्धि व शान्ति चाहते हैं तो हमें उस महान ईश्वर को जानकर फिर उसे मानकर तत्पश्चात पूर्ण श्रद्धा के साथ उसकी दी शिक्षा या उसके अनुकूल ग्रन्थ के अनुसार ही हमें अपना आचरण बनाना होगा।

5. जैसे शीत से पीड़ित पुरुष का आग के पास जाने से शीत नष्ट हो जाता है। उसी प्रकार ईश्वर के समीप होने से सब दोष व दुख छूटकर परमेश्वर की तरह जीवात्म के गुण व कर्म पवित्र हो जाते है। इसलिए परमात्मा की उपासना अवश्य करनी चाहिए इससे उपासक की आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि पहाड़ जैसा दुःख आने पर भी नहीं घबराएगा तथा उस दुःख को भी आसानी से सहन कर लेगा।

6. इस संसार में परमात्मा का सुख सबसे बड़ा सुख है और जिसको उस सुख से लगाव हो जाए तो संसार की सब वस्तुओं से अलगाव हो जाता है।

7. मन में संतोष होना स्वर्ग की प्राप्ती से बढ़कर है। संतोष ही सबसे बड़ा सुख है। संतोष यदि मन में भलीभांति प्रतिष्ठित हो जाये तो उससे बढ़कर इस संसार में कोई सुख नहीं।

8. दुर्जन व्यक्ति का संग मानव को पतन की ओर ले जाता है, वहीं संतो की संगति से दुर्जन इंसान भी अच्छा बन जाता है। सत्संग से ही जीव को यथार्थ जीवन की समझ आती है। सत्संग से मात्र पृथ्वी पर रहने वालों का ही नहीं जल-थल व नभ में रहने वाले जीवों का भी कल्याण होता है।

-संकलन-सुधीर पांड्या
दिल्ली

ये विचार भी तो मूल्यवान है

संसार में मूल्यवान वस्तुओं को भी अमूल्यवान समझ लिया जाता है- यथा आभूषण, सम्पत्ति, वाहन अद्भूत वस्तुएं, वस्त्रालंकार आदि। परन्तु कुछ बातें जो वास्तव में अमूल्य है उन्हें बौद्धिक रूप से मानव स्वयं में आत्मसात कर व्यवहारिक रूप से दैनिक आचरण में प्रयुक्त कर उपयोग में लाएं तो जीवन चिंतामुक्त, निरापद् भय विहिन सुखी सानन्द बन सकता हैं।

विचारकों ने उन्हें प्रायोगिक रूप से महत्वपूर्ण व बिना मूल्य अनमोल मान लिया है। विभाजन ऐसा किया है कि वे 4-4 विशेषताएं लिए हैं

(अ) कभी लौटती नहीं:-

1. कमान से निकला बाण - निशाना सोच समझकर के लगाना चाहिए
2. समय जो बीत गया - घटना के समय मानसिक संतुलन रखना
3. कही हुई बात/कथन - कोई भी बात पूरी तरह सोच-समझकर कहना
4. मिटा हुआ अज्ञान - ज्ञान प्राप्ति से अज्ञानता पीछे छूट जाती है।

(ब) बातें जो दुर्लभ हैं-

1. पवित्र धन अर्थात हक की कमाई
2. दान करते नम्रता
3. वीर का स्वभाव दयालु
4. सत्ता/बल/अधिकारवान होने पर निरभिमान रहना

इन सद्गुणवाला समझों भगवान की महती कृपा का पात्र है।

(स) इनकी विभिन्न अवस्थाओं में परीक्षा होती है।

1. निर्धनता में स्त्री की सहचारिणी रूप में
2. शूरवीर की युद्ध के मैदान में
3. बदनामी के समय मित्र व बंधू के स्नेह की

सत्ता में अधिकारी/धनवान/कंपनी में निर्देशक होने पर खुशामद करने वाले दिखावटी मित्र, परन्तु इन परिस्थिति से वंचित होने पर जो साथ न छोड़ स्नेह करते है वे सच्चे मित्र है। जमीन से जुड़े रहने का आभास देते हैं।

ऐसे उतार-चढ़ाव व परिस्थितियां प्राणी-मात्र में सहिष्णुता/साहस/समता व साक्षित्व की परीक्षार्थ ही आती है। ऐसे समय ही ईश्वर के प्रति प्रेम व संसार की अनाशक्ति के रुबरु हो मिथ्या संसार व साक्षी परमात्मा को सत्यता का रहस्य समझना चाहे तो समझ सकते हैं।

प्राणी इन अनमोल आचरण को दैनंदिन व्यवहारिक रूप से प्रयोग में अपनाएं तो आनंदित सुखी चिन्ता रहित जीवन की ओर उसके कदम आगे बढ़ते जाएंगे।

-संकलन पी.आर. जोशी

बीवी का मोबाइल

जय- आज तेरे मोबाइल पर बड़े सारे 'आई लव यू' के मेसेज आ रहे हैं, क्या बात है।

वीरु- बड़े फख से बोला, जी दरअसल आज मैं अपनी बीवी का मोबाइल ले आया हूं।

धारावाहिक भाग 4 दाम्पत्य जीवन के स्वर्ण सूत्र

एक दूसरे की प्रशंसा करने की आदत डालें...

अभी तक आपने पढ़ा - गृहस्थ जीवन में सुखी रहने के लिए उसका पूर्णानन्द लेने के लिए एक-दूसरे में घुल-मिल जाना जरूरी है। एक-दूसरे के रिश्तेदारों का उचित सम्मान करें। अपने साथी के विचार एवं पसंद का ध्यान रखें। अन्य व्यक्तियों के सामने एक-दूसरे की आलोचना न करें। वैसे तो दुनिया में सभी जीते हैं परन्तु एक-दूसरे के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से जीना तथा अपने दोषों का दमन करना आसान नहीं है। अब आगे...

यदि किसी से कोई भूल हो जाये, तो फटकारिये नहीं। भूल सुधार का सहृदयता-पूर्ण ढंग यह है कि भूल चाहे अपनी न हो, तो भी अधिक भूल अपनी ही मानिये, उस पर खेद प्रगट कीजिए देखिये कि अपराधी कैसे गद्-गद् होकर अपनी भूलों पर पश्चाताप प्रकट करता है।

स्मरण रहे- किसी के दोषों का बखान करना, उसे दोषी सिद्ध करके लोगों की दृष्टि में उसे गिराने का प्रयत्न करना उसके दोषों को केवल दृढ़ करने में ही कारण नहीं होता, वरं उसके दोषों के स्वरूप को और भी भीषण बनाने और उसकी संख्या बढ़ाने में भी कारण होता है। किसी को दोषी साबित कर के उस दोष को सदा के लिये उसके पल्ले मत बांधों। उसको निर्दोष बनाने के लिये उसे अपना कर, उससे प्रेम कर उसके दुःख में सच्ची सहानुभूति प्रगट कर और उसके थोड़े से भी सच्चे गुणों की सच्ची प्रशंसा करके ऐसी सुन्दर स्थिति उत्पन् कर दो कि जिसमें वह तुम को अपना हितेषी-सुहृद् समझे और तुम्हारा प्रेम भरा संकेत पाते ही नाक से बलगम छींक फैंकने की भांति सहज ही अपने दोषों को निकाल फैंके और उस स्थिति में आराम-शांति का अनुभव तथा गौरव बोध करें।

अपने जीवन-साथी को उत्साहित करना, ऊंचा उठाना, शिक्षित-सुसंस्कृत, सभ्य नागरिक बनाना आप का कर्तव्य होना चाहिये। समय-समय पर एक-दूसरे को धन्यवाद अवश्य करते रहे। प्रत्येक अच्छाई की प्रशंसा करने से न चुकिये। प्रशंसा से उनके गुण तथा अच्छा स्वभाव और भी अधिक विकसित हो सकेगा। मित्र भाव, सहनशीलता, संगठन, सहयोग बढ़ेगा। अतः प्रशंसा कीजिये और हृदय से कीजिये, दिल खोल कर कीजिये। प्रशंसा के दो शब्द हृदय में आनन्द की लहर पैदा कर देंगे। यद्यपि यह बहुत छोटी-सी बात है किन्तु जीवन छोटी-छोटी बातों से ही बनता और बिगड़ता है। ऐसी छोटी-छोटी बातों का जीवन में विशेष महत्व है।

-सूर्यकान्त पौराणिक
भौंरासा, जिला देवास

---

31 जनवरी 2010 ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

गृहिणी भी कर सकती है समाजसेवा

धर्म की प्रतिमूर्ति देवी स्वरूपा श्रीमती प्रेमा मदन बिहारीजी मेहता

समाज में प्रत्येक बहु का अपनी सास के साथ एक अनोखा रिश्ता रहता है। यूं भी हर व्यक्ति की अपनी विशेषताएं होती है। मेरी सासु मां का व्यक्तित्व भी बहुमुखी रहा है। अतीत की घटनाएं इतिहास बन जाती है और उन्हीं इतिहास के पन्नों के अनुभव कहां और किस तरह सहायता करते हैं इसका बखान कोई अनुभवी ही कर सकता है। स्मृतियों के सुगंधित फूलों को एक माला में पिराने का प्रयत्न किया है। साथ ही रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं की प्रासंगिकता का आभास कराने की भी कोशिश की है। जब से मैं ससुराल आई मैंने अपनी सासू माँ की दिनचर्या घड़ी के घंटों के साथ सही समय पर पाया। जब सब बिस्तर में दुबके रहते वो बगैर अलार्म के प्रातः चार बजे अपने भजनों की गुनगुनाहट के साथ उठ जाया करती थी। पूरे घर को बुहारने व स्नान करने के पश्चात ही रसोईघर में प्रवेश करती थी। कितना भी आवश्यक कार्य क्यों न हो स्नान, ध्यान व पूजा-पाठ में विलम्ब उन्हें बिलकुल पसन्द नहीं था। पूरी तन्मयता से पूजा में लीन होते हुए भी अन्य गृहकार्य भी बड़ी कुशलता से निपटाती थी। परिवार के सदस्य देर तक सोते रहते तो कहती 'वाड़ो विगड्यो रे वासुदेवा'। घर में कानून-कायदे का पालन करना तथा करवाना उन्हें पसन्द था। बगैर स्नान किए भोजन बनाना, घर में जूते-चप्पल लाना, बाजार की तैयार वस्तुएं एवं लहसून प्याज से उन्हें सख्त नफरत थी। सब प्रकार के अचार, मुरब्बे, पापड़ व बड़ियां स्वयं ही बनाती थी। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के ये सूत्र कोई उनसे सीखें। सेवा भावना व किसी की बीमारी में पूरी लगन से तीमारदारी करना उनका स्वभाव था। कोई कहीं भी बीमार हो वो सबसे पहले हाजिर हो जाती थी। चाहे परिवार का सदस्य हो, रिश्तेदार हो या अड़ोस पड़ोस से कोई अस्पताल में भर्ती हो, वो सेवा में जुट जाती थी। सबकी पसन्द का ध्यान रखते हुए टिफिन भिजवाना तथा अन्य आवश्यकताएं पूरी करना वो अपना कर्तव्य समझती थी। सेवा के साथ ढांढस बंधाना वो भूलती नहीं थी।

अपने पांचो, बच्चों से उन्हें बहुत प्यार था। दोनों बेटे बबलु गट्टू अपने कार्यस्थल पर कैसे होंगे यह चिन्ता उन्हें सदा सताती थी। बच्चे चाहे कहीं भी रहे उनके जन्मदिन उनके पसन्दीदा पकवान बना पड़ोसियों के साथ मनाना वे नहीं भूलती थी।

अतिथि-सत्कार करना उनकी आदत थी। बस मुंह से निकला नहीं कि फलां चीज खानी है, उसी समय तैयार। कभी यह नहीं कहती कि थक गई हूं।

संघर्षों में किस तरह अटल रह कर परिस्थिति का सामना करना इसमें उनकी कोई सानी नहीं थी हमेशा कहती कि चिन्ता क्या करना- कभी घी घना तो कभी मुट्ठी भर चना। अपने इसी गुण के कारण वो सबके बीच अपनी अलग पहचान बना लेती थी। उनकी दबंगता व निडरता हम सब परिवार वालों के लिए ढाल का काम करती थी। प्रतिकूल वातावरण को किस तरह अनुकूल बनाना वो खूब जानती थी। उनका स्वभाव नारियल सा था। ऊपर से कठोर व अन्दर से कोमल।

यादों के झरोखे से

मित्रता कभी बुढ़ी नहीं होती

बात बहुत पुरानी है मैं होस्टल में रहकर पढ़ती थी- पिताजी मुंगेली में तहसीलदार थे। हम तीन लड़कियों का ग्रपु था कृष्णा मल्होत्रा, सरोज राव और मैं अध्ययन समाप्त होते ही हम सब अपनी-अपनी जगह वापस लौट गयी तथा कौन कहां गया कुछ पता नहीं चला। कभी-कभी सुनने में आया था कि कृष्णा मल्होत्रा बम्बई में हैं चूंकि मेरी छोटी बहन का विवाह बम्बई में हुआ था और समय-समय पर बहन के यहां आना-जाना लगा रहता था एक बार ऐसे ही बातों-बातों में कृष्णा मल्होत्रा की बातें चली, जो विवाह पश्चात कपूर खानदान में चली गई थी बहनोई साहब ने जब यह सुना कि मेरी इच्छा बचपन की सहेली कृष्णा से मिलने की है तो उन्होंने उसका पता ढूंढ निकालने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। चूंकि बहनोई साहब एक लम्बे अरसे से बम्बई में रह रहे थे इसलिये वे काफी छोटी बड़ी हस्तियों से परिचित थे और उनकी खोजबीन व कार्यकुशलता रंग लाई। उन्होंने कृष्णा कपूर का पता व फोन नम्बर खोज निकाला। बस फिर क्या था, फोन पर ही परिचय के साथ ही पुरानी यादें ताजा होने लगी। वह एक दम पहचान गई तथा कल मिलने आने के आग्रह ने रही सही कमी भी पूरी कर दी।

दूसरे दिन बताये समय पर मैं अपने बड़े भाई व भतीजियों के साथ उसके निवास स्थान की ओर टेक्सी से चल पड़ी। बहनोई साहब को कहीं दूसरी जगह विशेष कारण से जाना था अतः वे हमारे साथ नहीं थे इसका मुझे अफसोस था। कृष्णा के निवास पर पहुंचे तो सुरक्षा गार्ड ने नाम पता पूछा। मैंने कहा कल जिनसे फोन पर बात हुई थी वे मिलने आई है उसने बैठने को कहा और कुछ ही क्षणों में कृष्णा बाहर आई मिलते ही गले मिली और हम सब को बैठक में ले गई पुरानी बातों व यादों का सिलसिला निरन्तर चलता रहा। इतने में उसके पति देव बाहर से लौटे। उनसे मेरा परिचय करवाया। शूटिंग से थके होने के कारण वे आराम करने अन्दर चले गये। इधर नाश्ते का अम्बार लग गया और लो और लो का आग्रह होता रहा। इस बीच उसने बताया कि बच्चे गणतंत्र दिवस के सिलसिले में दिल्ली गये हुए है, अन्यथा सबसे भेटं हो जाती। मैंने कहा मेरी तो तुमसे मिलने की तीव्र इच्छा थी सो मुलाकात हो गई। इसका अपार आनन्द रहा काफी देर के बाद जाने की इच्छा प्रगट की बाहर आये तो पूछा टैक्सी कहां है- मैंने कहा वो तो गई उसने फोरन अपने ड्राईवर से हमें वडाला तक घर पहुंचाने को कहा। बाहर निकलते समय वह एक डिबिया व कुछ नोट मेरे हाथ में थमाते हुए बोली, यह रख लो मेरी ओर से कार से हम रवाना हुए। बाद में देखा कि डिबिया में सफेद डायमण्ड के सोने के टॉप्स थे। मुझे तो मिलने जाने के समय मिठाई भी ले जाने की याद नहीं रही थी। उसके प्रेम ने मुझे विव्हल कर दिया और उसका जबलपुर जाते समय खण्डवा में मिलने का वादा याद आया। आप जानते हैं ये कृष्णा कपूर कौन थी। ये थी प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता राजकपूर की धर्मपत्नी। उसके द्वारा दिये गये टॉप्स में उसकी याद समाहित है। जब भी पहनती हूं तो वे क्षण जीवन्त हो जाते हैं। कितनी आत्मीयता,कितना अपनापन 25-30 वर्षों के बाद भी वे व्यक्ति महान है जो मित्रता के अंकूरों में वटवृक्ष जैसी विशालता बनाये रखते हैं। समय के बूढ़ेपन में बचपन की सी कोमलता का अनुभव करते व कराते रहते हैं।

-सुश्री लीला पण्डित
ब्राह्मणपुरी, खण्डवा
फोन 2226028, मो. 9425415028

बिना देखे कुछ नहीं

बंटू दुकान पर गया और सेल्समैन से कहा- मुझे डॉग फूड चाहिये।

सेल्समैन- आपका कुत्ता कहां है?

बंटू- वो घर पर है।

सेल्समैन- सर, हमारे स्टोर की पॉलिसी के अनुसार बिना कुत्ता देखे हम डॉग फूड नहीं दे सकते।

बंटू अगले दिन फिर दुकान पर गया और कैट फूड दिखाने को कहा।

सेल्समैन ने कहा- आपके पास बिल्ली है?

बंटू- जी हां, घर पर है।

सेल्समैन- लेकिन सर, पॉलिसी बिना बिल्ली देखे कैट फूड बेचने की इजाजत नहीं देती।

अगले दिन बंटू एक झोला लेकर दुकान पर गया और सेल्समैन से कहा- जरा इसमें हाथ डालकर देखो।

सेल्समैन ने हाथ डालकर कहा- अरे ये गर्म है और गीला भी है। आखिर है क्या इसमें?

बंटू ने कहा- मुझे टॉयलेट पेपर चाहिए।

|| जय महाकाल || || श्री हाटकेश्वराय नमः || || जय सिद्धनाथ ||

पं. पियूष नागर (मोन्दू गुरु)

पितृ दोष एवं काल सर्पदोष विशेषज्ञ

मो. 09907528115, 09200153163

निवास- 33/2, वराही माता की गली, कार्तिक चौक, उज्जैन (म.प्र.)
कार्यस्थल- सिद्धनाथ घाट, भैरवगढ़, उज्जैन (म.प्र.)

मूर्ख मित्र से गुणी शत्रु श्रेष्ठ होता है

सैकड़ों वर्ष पूर्व की बातहै। किसी नगर में एक विद्वान ब्राह्मण बालक रहता था। उसने 25 वर्षों तक शास्त्रानुसार ब्रह्मचर्याश्रम में रहते हुए एक योग्य गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की। योग्य शिष्य पाकर गुरु ने भी उसे तन्मयता से ज्ञान प्रदान किया तथा उसे सभी विद्याओं में पारंगत कर दिया। शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु के दीक्षान्त प्रवचनों उपरान्त वह गुरु के आश्रम में पुनः अपने नगर को लौट आया।

कुछ दिन अपने वृद्ध माता-पिता के पास रहकर उसने उनकी सेवा-सुश्रुषा की। उसे ध्यान आया कि वृद्ध पिता भिक्षाटन कर लाते हैं व मैं बैठा-बैठा खा रहा हूं, यह तो अधर्म है। वह दूसरे दिन अपने योग्य कोई उचित काम की तलाश में माता-पिता की आज्ञा व आशीर्वाद लेकर निकल पड़ा। वह कई नगरों-ग्रामों में घूमता हुआ एक विशाल नगर में पहुंचा। वहां भी जब उसे कोई योग्य कार्य नहीं मिला तो वह रात्रि विश्राम के लिये एक मंदिर परिसर में जाकर लेट गया। लैटे-लैटे सोचने लगा कि मैंने गुरुजी से सभी विद्याओं में पूर्ण शिक्षा प्राप्त की, किन्तु न जाने क्यों आज कोई भी विद्या काम नहीं आ रही है, क्यों न चोरी ही की जावे। यह भी एक कला है। यदि धर्म के अनुरूप चोरी की जावे तो उसमें पाप नहीं होता।

इस प्रकार विचार कर वह अपना सामान वहीं मन्दिर के किसी कोने में रखकर कहीं चोरी करने के विचार से वहां से चल दिया। वह जिस किसी के घर में चोरी करने का सोंचता वहां उसे धर्म याद आ जाता व वह आगे बढ़ जाता। आगे बढ़ते-बढ़ते वह राजा के महल के पास पहुंच गया व वहां चोरी करने के विचार से महल में घुस गया। जब वह चुराने के लिये जिस वस्तु को उठाता, उसे लगता यह अधर्म है, पाप है। पूरे महल में छुप-छुप कर वह चोरी योग्य सामान ढूंढता रहा, किन्तु उसे कोई वस्तु ऐसी नहीं मिली जिसे चुराने पर उसे पाप न लगे। अकस्मात उसे एक कोने में साल के छिलके पड़े दिखाई दिये। उसने सोचा इन्हें चुराने में कोई दोष नहीं होगा, क्योंकि यह किसी का कोई धन नहीं है। ऐसा विचारकर उस ब्राह्मण पुत्र ने वे साल के छिलके अपने दुपट्टे के कोने में बांध लिये। वह राजमहल से बाहर निकलने के लिये आगे बढ़ा। थोड़ा आगे जाने पर उसकी दृष्टि राजा के कक्ष की ओर गयी।

विद्वान ब्राह्मण ने वहां देखा कि सुन्दर पलंग पर राजा सोये हुआ है व वहां एक बन्दर नंगी तलवार लेकर राजा के पलंग के आसपास घूम रहा है। राजा के पलंग के उपर मद्धिम प्रकाश लिये एक फानूस लटका हुआ था। अनायास उस फानूस पर एक विशाल सर्प चलता दिखाई दिया। उस सर्प की छाया राजा की छाती गले व सिर पर दिखाई दे रही थी। नंगी तलवार लेकर पहरा दे रहे बन्दर की आंखे उसी ओर गढ़ी हुई थी व बन्दर तलवार उठाकर वार करने ही वाला था कि उस ब्राह्मण ने सारी बात समझ ली व वहां दीवार पर टंगी तलवार से बन्दर का काम तमाम कर दिया व बाद में फानूस से उतारकर सर्प के भी टुकड़े कर दिये। जाते समय उसने दीवार पर लिखा कि

वरमेको गुणी शत्र, न मुर्खों हितकारकः।

प्रातः जब राजा नींद से जागा तो उसने अपना कक्ष रक्त रंजित देखा व अपने प्रिय बन्दर को मृत व सर्प के टुकड़े देखे तो चिंतित हो गया व सेवकों को बुलाकर उनसे पूछा। सभी ने घटना से अनभिज्ञता प्रकट की। राजा ने अपने मंत्री व सेनापति को बुलाया वे आये व उन्होंने भी घटना पर विचार किया किन्तु वे भी किसी निर्णय तक नहीं पहुंचे, तभी अचानक मंत्री की दृष्टि दीवार पर लिखे अधूरे श्लोक पर पड़ी। उसे पढ़कर उन्होंने निर्णय किया कि यह श्लोक जिस किसी ने भी लिखा है वह विद्वान है व हो न हो इस घटना से अवश्य उसका कोई सम्बंध है। राजा ने तत्काल घोषणा कर दी कि जो भी विद्वान इस श्लोक को पूर्ण करेगा, उसे राजपुरोहित बनाया जावेगा। कई विद्वान आये व श्लोक को पूर्ण करने का प्रयास किया, किन्तु उन्हें उपरोक्त घटना की जानकारी नहीं होंने से उनके द्वारा पूर्ण किये गये श्लोक राजा व मंत्री को नहीं जंचे। पूरे राज्य में घटना व उक्त श्लोक की ही चर्चा थी। धीरे-धीरे यह बात उक्त विद्वान ब्राह्मण को पता चली। वे राजा के दरबार में उपस्थित हुए व उनसे श्लोक पूर्ण करने का निवेदन किया। तब राजा के मंत्री उन्हें उक्त अधूरे श्लोक को दिखाने ले गये। विद्वान ब्राह्मण ने तत्काल श्लोक पूर्ण कर दिया जो इस प्रकार था

वरमेको गुणी शत्रु, न मुर्खो हित कारकः।
वानरेण हतो राजा, विप्र चौरेण रक्षिता।।

मूर्ख हितैषी से एक गुणी (गुणवान) शत्रु श्रेष्ठ होता है। जैसे हितैषी मूर्ख बन्दर राजा को मार रहा था, किन्तु चोर (शत्रु) ब्राह्मण ने उनकी रक्षा की। श्लोक पूर्ण करने के उपरान्त ब्राह्मण ने सारी घटना विस्तार से राजा को बताई व बताया कि बन्दर सर्प की छाया को देखकर उसे ही असली सर्प समझ रहा था। यदि तत्काल उसे नहीं मारा जाता तो वह तलवार से राजा की गर्दन पर वार कर देता। राजा को बड़ी प्रसन्नता हुई उन्होंने उक्त विद्वान ब्राह्मण को गले लगा लिया व भारी पुरस्कार दिया तथा राज पुरोहित के पद पर उन्हें नियुक्त किया।

-सत्येश नागर
तराना, जिला उज्जैन

अर्ज किया है

अर्ज किया है..

आप हमारे दिल में बसे हो...

आप हमारे दिल में बसे हो..

आप हमारे दिल में बसे हो...

थोड़ा साइड में हो जाइए...

सांस लेने वाली नली में फंसे हो...

हमारे पापा

श्री डी.व्ही. मेहता के
पुण्य स्मरण
२२ जनवरी पर विशेष

प्यारे पापा,

एक के बाद एक चार बेटियाँ होने पर आप बहुत दुखी हुए थे, तब आपने शायद ये कभी न सोचा होगा कि यही बेटियाँ आपको जान से ज्यादा प्यारी हो जायेंगी। आपने हमारे और भाई के पालन-पोषण में कभी कोई फर्क नहीं रखा। हमारी छोटी से छोटी बातों का भी ध्यान रखा। सही तरीके से ब्रश करने की आदत डालने के कारण ही हमें कभी डेंटिस्ट के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ी। मैं बचपन में बहुत कमजोर व बीमार रहती थी। खाने-पीने के प्रति भी बहुत लापरवाह थी। आप मुझे अपने सामने बैठाकर खिलाते थे। मेरी तबीयत का ध्यान आप हमेशा रखते थे। जब हम छोटे थे तब आप हमें दादाजी व दादीजी के पैर दबाने के दस पैसे रोजे देते थे। लालच से ही सही मगर हम बड़ों का सम्मान व सेवा-भाव सीख गए। दामादों का चुनाव करते वक्त भी आपने कभी जल्दबाजी नहीं की। हर तरह से संतुष्ट होने पर ही आपने हमारे रिश्ते किए। एक बहुत योग्य लड़के का रिश्ता अपनी छोटी बेटी के लिए ठुकरा दिया, क्योंकि उस लड़के की माँ बहुत तेज स्वभाव की थी और आपको लगा आपकी बेटी ऐसी सास के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पाएगी। बेटी की शादी के बाद अक्सर माता-पिता ये समझ लेते हैं कि अब बेटी की सारी जिम्मेदारी उसके पति व ससुराल वालों की है, मगर आप हमारी हर तकलीफ परेशानी में हमारे साथ रहे। मुझे व दीदी को शादी के बाद भी महीनों मायके में रहने का काम पड़ा, मगर हमें कभी ये महसूस ही नहीं हुआ कि शादी के बाद ये घर हमारा नहीं है। हम आज भी उस घर में उतने ही अधिकार से रहते हैं जैसे पहले रहते थे। वो घर हमारे साथ-साथ हमारे बच्चों का भी हो गया। रोशो की पढ़ाई के कारण मुझे आपके व माँ के साथ रहने का सौभाग्य सबसे ज्यादा मिला। हमारे पति भी हमें आपके पास छोड़कर निश्चिंत हो जाते थे। उन्हें आप पर विश्वास था, ''पापाजी हैं न सब सम्भाल लेंगे'' 80 साल की उम्र में भी हमें या हमारे बच्चों को बीमार पड़ने पर स्वयं ही डॉक्टर के पास ले जाते, हमारी दवाई का ध्यान भी खुद ही रखते। हमें कभी-कभी आपकी याददाश्त पर आश्चर्य होता था। परिवार के हर सदस्य के टेलीफोन नम्बर, जन्मदिन, शादी की सालगिरह आपको याद रहती थी। हमारे बच्चों की किस दिन कौन सी परीक्षा है, ये उनके पिता को याद रहे न रहे मगर आपको हमेशा याद रहता था। रात को सोते वक्त घर के हर सदस्य का नाम लेकर उनके लिए ईश्वर से प्रार्थना करते थे। हमारे बच्चों की चिंता आपको हमसे ज्यादा रहती थी। आप बहुत अनुशासनप्रिय, समय के पाबंद व साफ दिल के इंसान थे, जो मन में आया कह दिया कुछ भी मन में नहीं रखते। किसी-किसी को आपकी बातें कड़वी भी लगती थी, मगर वो बातें तो कुनेन होती थी जिसके बिना मलेरिया बुखार नहीं उतरता। जब आप नाराज होते तो आपकी नाराजगी केवल आपका छोटा नाती (अक्षत) ही दूर कर सकता था, जो आपके दिल के बहुत करीब था।आपका काम इतना व्यवस्थित था कि आपके रिकार्ड में बिजली का 25 साल पुराना भी मिल जाता था। हमारे भी जरूरी कागजात आप ही सम्भालकर रखते थे। आपके बाद भी हमें किसी काम के लिए परेशान नहीं होना पड़ा, चाहे वो बैंक अकाउन्ट हो या पेंशन। आप जैसे खाने के शौकीन बहुत कम लोग होते हैं, मिठाई हो या नमकीन, चटनी हो या अचार हर तरह का खाना आप शौक से खाते थे। हमारी माँ ने भी जिंदगी भर आपको आपकी पसंद का खाना ही खिलाया। मैं भी हर साल आपके लिए तरह-तरह के अचार-मुरब्बे डालकर लाती, आपको आँवले के मुरब्बे का बहुत शौक था। आपके जाने के बाद तो आँवले का मौसम कब आता है कब निकल जाता पता ही नहीं चलता। ईश्वर ने असमय ही आपसे आपका बेटा छीनकर जो अन्याय किया था उसके बदले में उसी ईश्वर ने चार बेटे जैसे दामाद व तीन आज्ञाकारी नाती-पोते दिए, जो अंत समय तक आपके साथ रहे। सबसे बड़ा तोहफा ईश्वर ने आपको धरा सी सहनशील, आज्ञाकारी, पतिव्रता, सेवा-भावी, मृदुभाषी पत्नी के रूप में दिया। हमारी माँ 75 साल की उम्र में भी आपको गर्म रोटी बनाकर खिलाती रही। बीमार अवस्था में ही जब आपने हमसे ये कहा कि ''वो मुझे लेने आए थे मगर मैंने कहा जब मेरे दामाद आ जायेंगे, तब तुम्हारे साथ चलूंगा'' तो हम सब स्तब्ध रह गए थे। दामाद के आ जाने के बाद उनके साथ खाना खाकर बातें करने के बाद ही आप कोमा में चले गए। आप बहुत दृढ़ प्रतिज्ञ हैं ये तो हम जानते थे, मगर काल को भी रोक देंगे यह न सोचा था। आपने जिंदगी में अपनी मेहनत से जो चाहा वो पाया। आप नहीं चाहते थे कि बिस्तर पर पड़े रहें और किसी को आपकी सेवा करना पड़े तो वैसा ही हुआ।

आप उस वट वृक्ष के समान थे जिसकी घनी व ठंडी छाँव में हम सब सुकून पाते थे। आपके जाने के बाद लगा कि ये घनी छाँव हम पर से उठ गई है। तभी उस वट वृक्ष में आप ही की तरह दृढ़ प्रतिज्ञ व आत्म विश्वास से भरा हमारी माँ का चेहरा नजर आया जो कह रहा था अभी मैं हूँ ना।

-आपकी बेटी
आशू

द्वारा : श्रीमती आशा नागर
पत्नी श्री ए.के. नागर, भा.व.से.उप संचालक,
कान्हा टायगर रिजर्व, मण्डला (म.प्र.)

महती आवश्यकता

अकलेरा - नागर ब्राह्मण जीवन-साथी परियच सम्मेलन एवं परिणय परिचय पत्रिका समाज की एक महती आवश्यकता है। परिचय सम्मेलन एवं परिणय पत्रिका के द्वारा समाज के विवाह योग्य युवक-युवती की जानकारी आमजन तक आसानी से पहुंच जाती है। 24 दिसम्बर 2008 को उज्जैन एवं 14 जून 2009 को इन्दौर में हुए युवक-युवती परिचय सम्मेलन के माध्यम से समाज में कई रिश्ते तय हुए हैं। ऐसा देखने में आया है एवं सर्वत्र प्रशंसनीय रहा। जानकारी प्राप्त हुई है कि फरवरी 2010 के जय हाटकेश वाणी मासिक पत्रिका के माध्यम से निःशुल्क परिणय परिचय पत्रिका का जो प्रकाशन किया जा रहा है एक अच्छा, प्रशंसनीय व सराहनीय प्रयास है।

-श्रीमती गायत्री नागर, अकलेरा

जनवरी माह का राशिफल

चन्द्र राशि पर आधारित

मेष राशि-

मेष राशि वालों के लिये यह महीना उत्तम दिखता है। कार्य व्यापार में वृद्धि रहेगी। जिन लोगों का धन कहीं फसां हुआ है प्राप्त होने के योग बनते हैं। धर्म कर्म पर खर्च होगा तथा धार्मिक यात्राओं के योग बनेंगे। परिवार में बड़ों को स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय उतना अच्छा नहीं है। जो लोग वात रोग से पीड़ित हैं उन्हें इन दिनों पूरी सावधानी रखनी होगी।

वृष राशि-

वृष राशि वालों का यह महीना अच्छा दिखता है। इनके कार्य व्यापार में उन्नति होगी। जो लोग नौकरी पेशा में हैं उन्हें पद प्रतिष्ठा का लाभ होगा। स्वास्थ्य का समय थोड़ा कमजोर दिखता है। जो लोग शेयर सट्टे या स्पेकुलेशन का कार्य करते हैं उनका समय मध्यम श्रेणी का रहेगा। आर्थिक मामलों में वृष राशि वालों की लगातार उन्नति होती रहेगी।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि वालों के लिए यह समय मिलाजुला रहेगा। इन्हें स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी की आवश्यकता है। जहां तक कार्य व्यापार की बात है वह लगातार अच्छा ही चलता रहेगा इसलिये आर्थिक स्थिति में सुधार रहेगा। मिथुन राशि वालों को कुछ घरेलू माहौल में तनाव की सम्भावना बनती हैं।

कर्क राशि-

कर्क राशि वालों का यह समय अच्छा जायेगा। जो लोग नौकरी या फिर किसी नये कार्य की तलाश में है उनके लिए यह समय अनुकूल रहेगा। धन बढ़ेगा। साथ ही खर्च भी काफी होगा। धार्मिक कार्य या यात्राओं पर खर्च होगा। बहुत से लोगों को सन्तान योग बनतें हैं तथा बहुत से लोगों को इन दिनों विवाह के योग भी बनेंगे।

सिंह राशि-

सिंह राशि वालों को यह महीना उत्तम रहेगा। इनके कार्य व्यापार में वृद्धि होगी। धन बढ़ेगा। स्वास्थ्य उत्तम चलेगा। यात्रा के योग बनते हैं। लेकिन बहुत अचानक और उल्टे सीधे खर्च भी होंगे। जो लोग किसी कानूनी विवाद में फंसे हुए है उन्हें विशेष सावधानी की आवश्यकता है। सिंह राशि वालों को कर्ज, ब्याज के लेनदेन से बहुत दूर रहना चाहिये।

कन्या राशि-

कन्या राशि वालों के लिए यह समय अच्छा दिखता है। लेकिन कर्ज ब्याज के लेनदेन से इनको दूर रहना चाहिये। जो लोग लोहा या इलेक्ट्रानिक का कार्य करते हैं उन्हें समय विशेष अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय थोड़ा कमजोर है। अन्य मामलों में अच्छा रहेगा। बहुत से लोगों को इस समय विवाह आदि के योग बनेंगे।

तुला राशि-

तुला राशि वालों को यह महीना साधारण रहेगा। बारहवें घर में शनि चलने के कारण कोई भी कार्य होते-होते रुकेगा लेकिन बहुत से लोगों को मकान वाहन से सम्बंधित लाभ होगा। परिवार में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। बहुत से लोग शेयर सट्टे या स्पेंकुलेशन आदि में अच्छी कमाई कर सकेंगे। स्वास्थ्य के लिए समय अनुकूल रहेगा।

वृश्चिक राशि-

इस राशि वालों के लिए यह महीना बराबर अच्छा रहेगा। इनके कार्य व्यापार में वृद्धि होगी। लेकिन जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते हैं उनको भारी तनाव से गुजरना होगा। स्वास्थ्य के मामले में इनके ग्रह योग मिले जुले से रहेंगे। जो लोग कब्ज या पाइल्स आदि के रोगी है उनकी समस्याएं बढ़ेगी।

धनु राशि-

धनु राशि वालों के लिए यह महीना लाभकारी है। इनके दशम स्थान पर शनि होने के कारण अचानक अच्छा लाभ देगा। लेकिन नौकरी पेशा लोगों को अपने बास से सावधानी रखनी चाहिये। जिन लोगों का धन कहीं फंसा हुआ है उन्हें पुनः प्राप्त होने के अवसर मिलेंगे। धनु राशि पर इन दिनों राहु भी चल रहा है अतः कर्ज ब्याज के मामले में सभी को समस्या रहेगी।

मकर राशि-

मकर राशि वालों को समय अनुकूल रहेगा। इनके बहुत से रूके हुए कार्य पूरे हो जायेंगे। जो लोग किसी प्रोफेशन से जुड़े हैं उनको यह समय काफी अच्छा रहेगा। बहुत से लोगों को धार्मिक कार्य या यात्रा के योग बनेंगे। सामने मंगल होने के कारण मकर राशि वालों को अनावश्यक विवादों से बचना चाहिए।

कुंभ राशि-

कुंभ राशि वालों के लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। जो लोग व्यापार के क्षेत्र में हैं उनकी कमाई बढ़ेगी। जिन लोगों का धन कहीं फंस गया है वह सब प्राप्त होगा। परिवार में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से कुंभ राशि वालों के लिए यह समय कम ठीक है इसलिए सावधानी रखें तथा आवश्यकता पड़ने पर शनि के दान उपाय करें।

मीन राशि-

मीन राशि वालों के लिए यह महीना बहुत अच्छा जायेगा। कमाई के नये रास्ते मिलेंगे। बहुत से लोगों को यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे। धन की वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से मीन राशि वालों को सर्दी के रोग से बहुत सावधान रहना चाहिये। अन्य मामलों में समय उत्तम दिखता है। मीन राशि वालों में जिनकी गुरु दशा चल रही उनको विशेष अच्छा रहेगा।

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्त रेखा विशेषज्ञ वास्तुविद्

पुण्य स्मरण

आज भी
हर पल
यह अहसास है
दूर जाकर भी
आप दिल
के पास हैं

पुज्यनीय डॉ. डी. व्ही. मेहता

ब्रह्मलीन–२२ जनवरी २००७

श्रद्धावनत्–(धर्मपत्नी) विश्वलता मेहता,
(पुत्र वधु) साधना–स्व. श्री शरदचंद्र मेहता,
(बेटियां) अलका–प्रदीप नागर, आशा–अनिल नागर,
मुद्रा–हेमन्त मिश्रा, अंचला–जयन्त मिश्रा
(नाती–पोते) कोस्तुभ, अनुजा, शांतनु–रुपिका नागर,
अदिति, बेबी, अक्षत नागर, सांची,
शिविका मिश्रा एवं पिहू मिश्रा।

मालवमाटी में मां सरस्वती के वरद् पुत्र पं.श्री कमलकिशोरजी नागर के पुज्यनीय पिताश्री

आप ही के मार्गदर्शन में
अब तक ये जीवन बीता
आप ही से जीवन का
मूलमंत्र है सीखा
सर्वोपरि है आज भी
कर्तव्य, प्रेम और निष्ठा
आप ही से पाई
सत्कर्म की प्रेरणा

स्व. पं.रामस्वरुपजी नागर

आपको
शत्–शत्
नमन

–श्रद्धावनत–

जयहाटकेश वाणी परिवार

आदरांजलि

जिन्होंने जीवन को
सही अर्थों में
कर्मयोग में
जीया तथा हम
सबके लिए
प्रेरणा ज्योति
प्रज्जवलित की
जो हमारे जीवन का
आदर्श एवं प्रेरणा स्त्रोत है

पुज्यनीय गेंदालालजी शर्मा
१० जनवरी ८१

-श्रद्धावनत-

शर्मा परिवार, राऊ, इन्दौर
नागर परिवार, इन्दौर
शर्मा परिवार, माकड़ोन
शर्मा (पटेल) परिवार, देवास

नगर पालिक निगम, इन्दौर

नागरिकों से अपील

1. कृपया मार्गों एवं फुटपाथों पर अतिक्रमण नहीं करें।
2. अपनी दुकानों के आगे अतिक्रमण कर बाधा उत्पन्न न करें अन्यथा निगम द्वारा जप्त करने की कार्यावाही की जावेगी।
3. निगम स्वामित्व की दुकानों का किराया सम्पत्तिकर, जलकर एवं लायलेंस फीस समय पर जमा करें।
4. वाहनों को सड़क पर अथवा सार्वजनिक स्थानों पर रखकर आवागमन में बाधा उत्पन्न न करें।
5. अपने घर के आसपास, सार्वजनिक स्थानों जैसे- पार्कों, व्यवसायिक स्थलों, बाजार, रेल्वे स्टेशन, बस स्टैण्ड एवं आम रास्तों पर गंदगी न करें, गुमटी ठेलों के पास डस्टबिन अनिवार्य रूप से रखें।
6. अतिक्रमण करने पर निगम द्वारा दण्डात्मक कार्यवाही करते हुऐ अतिक्रमण सामग्री जप्त की जावेगी।
7. नगर निगम को सहयोग देकर अपने शहर को और भी अधिक व्यवस्थित एवं सुंदर बनायें।

नगर पालिक निगम, इन्दौर द्वारा जनहित में जारी

सभी समाज बंधुओं को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

CHANDRASHREE LABORATORIES & FARM PRODUCTS P. LTD. RAO (INDORE) 453 331
Mo.098260-46013

श्री गणेशाय नमः

सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर आपकी कॉलोनी में उपलब्ध

विजय स्टील डेकोर

फायबर शीट मनभावन रंग एवं डिझाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध

घर की बालकनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive G.P. Fitting 'Spring', Sanitary Fitting Gold line, C.P. की सम्पूर्ण श्रंखला व सभी कंपनियों के जीआई पाईप के विक्रेता

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट, दषिची चौराहा, इन्दौर
फोन-2321578, मो.98268-32786, 98936-24291
R.K. Dave (Pappu)

Your Success is our mission

बैजनाथ एकेडमी

'घर से दूर एक अपना घर'

संचालक
सुनील नागर

- शिक्षा और भारतीय संस्कार
- व्यवस्थित दिनचर्या • साऊथ इण्डियन(केरल) प्रशिक्षित स्टॉफ
- योगा, व्यायाम, मेडिटेशन • 25:1 का अनुपात
- एक्वाकल्स, खेल-खेल में शिक्षा पद्धति • अंग्रेजी वातावरण
- और भी बहुत कुछ.....

आवासीय विद्यालय
सी.बी.एस.ई. पेटर्न, इंग्लिश मीडियम स्कूल

Baijnath Acadamy

Shajapur: Shree Jain Motor Service Center
Near Radha Patrol Pump, A.B. Road Shajapur
Ph:07364-210811, 9826661387, 94240-27644

माकड़ोन नगर का पहला डे बोर्डिंग इंग्लिश मिडियम स्कूल

Makdone Public School, MAKDONE
Barothiya Road, Makdone (Dist.-Ujjain)
Mo-94245-11824

आपके घर के लिए भरोसेमंद स्टील

एस.के.एम. स्टील्स लि.
TATA TISCON

जालिमलोशन

दाद,
खाज
खुजली की
मशहूर दवा

ORIENTAL CHEMICAL WORKS
RAO (INDORE) 453 331 INDIA

बहु आयामी व्यक्तित्व – पं. जनार्दन राय नागर

पं जर्नादन राय नागर का जन्म उदयपुर में 16 जून, 1911 ई. को हुआ। बहुआयामी प्रतिभा के धनी पं. नागर ने शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता , राजनीति व समाज सेवा आदि क्षेत्रो में अपनी अमिट कीर्ति स्थापित की। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1936 में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण पं. नागर ने 1940 में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। गाँधीवादी संस्कारों से दीक्षित व कथा सम्राट प्रेमचन्द के आशीष पात्र रहे जर्नादन राय नागर ने मेवाड में शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से 1937 में हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना रात्रिकालीन संस्थान के रूप में की। पं. नागर की सतत् तपस्या के परिणाम स्वरूप यह संस्था उत्तरोत्तर प्रगति हुए वर्तमान में जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर रूपी वटवृक्ष के रूप में स्थापित है। पं. नागर ने अपने जीवन काल में प्रौढशिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, लोक शिक्षा, समाज कल्याण, चिकित्सा, साहित्य व शोध सम्बन्धी 50 से अधिक संस्थानों की स्थापना की।

शिक्षा की लोक साधना में लीन जर्नादन राय नागर की ऐकान्तिक साधना साहित्य-सृजन के रूप में निरन्तर गतिमान रही। उन्होनें उपन्यास, कहानी, गद्य-गीत, जीवन चरित्र व डायरी विधाओं में लेखन किया। उनके द्वारा रचित जगत शंकराचार्य जो कि 10 खण्डों में समाहित 5,500 पृष्ठों की विराट कृति है हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनके राम-राज्य उपन्यास के चार खण्ड प्रकाशित हो चुके है।

गद्य-गीत संग्रह 'एक शान्त आलोक में प्रसन्न' तथा जर्नादन राय नागर की कहानियाँ शीर्षक से दो कथा संग्रह राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हुए। बाल साहित्य पर केन्द्रित 'घर में बालक', 'शाला में बालक' तथा 'भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा आयोजन' व 'वयस्क और समाज शिक्षा' उनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ है। उनके नाटक 'आचार्य चाणक्य' 'पतित का स्वर्ग' 'उदा हत्यारा' 'जीवन का सत्य' अत्यन्त चर्चित तथा मंचित भी हुए।

पत्रकारिता के क्षेत्र में पं. नागर ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं की स्थापना संपादन व संचालन में योगक्षेम निर्वहन किया। 'मधुमती', 'स्वर मंगला', 'नखलिस्तान', 'बालहित', 'कल्कि', 'समाज शिक्षण', 'शोध पत्रिका', 'वसुन्धरा', 'जन मंगल', 'जन सन्देश' व 'अरावली' आदि पत्रिकाएँ उनकी कीर्ति पताकाएँ है।

राजस्थान साहित्य अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में उन्होनें राज्य में साहित्यक उन्नयन व मार्गदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की। वे केन्द्रीय साहित्य अकादमी, हिन्दी सलाहकार समिति (रेल्वे), केन्द्रीय प्रौढशिक्षा सलाहकार समिति के मनोनीत सदस्य रहे। विधानसभा में मालवी क्षेत्र से विधायक रहे। उन्हें नेहरू साक्षरता पुरस्कार व महाराणा मेवाड फाउन्डेशन पुरस्कार सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए। इस यशस्वी व्यक्तित्व का 15 अगस्त, 1997 को उदयपुर में निधन हुआ।

'हस्तलिपि' गीतांजली अपार्टमेंट
1926, नाटाणियों का रास्ता, जयपुर-3

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पवन शर्मा के लिए श्री दीपक प्रिंटर्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं प्रकाशित
सम्पादक–सौ.संगीता दीपक शर्मा,फोन : 0731-2450018, मो. : 098260-95995 Website : www.jaihatkeshvani.com